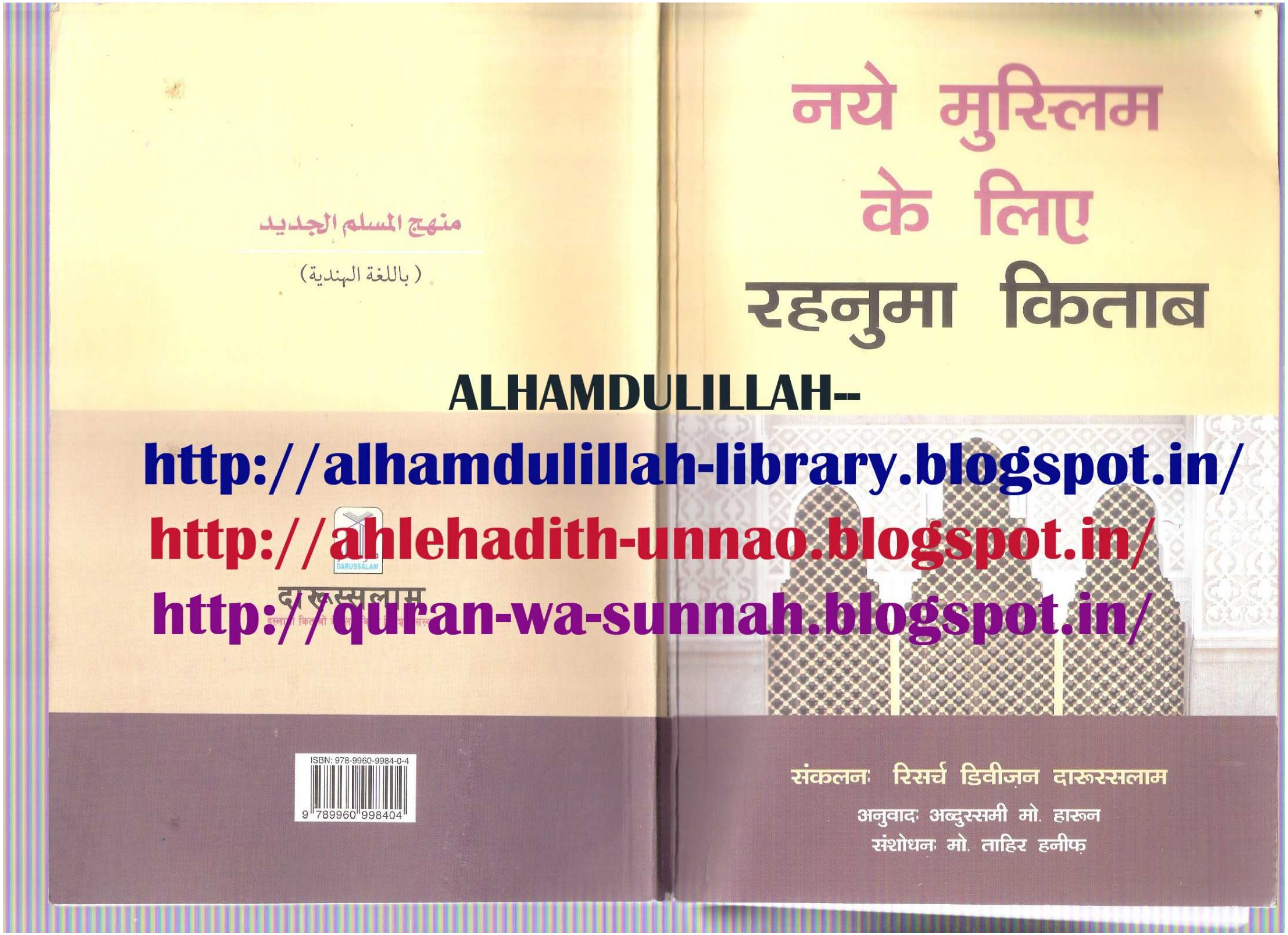

منهج المسلم الجديد
(باللغة الهندية)
DARUSSALAM
दारुस्सलाम
ISBN: 978-9960-9984-0-4
नये मुस्लिम के लिए रहनुमा किताब
ALHAMDULILLAH--
http://alhamdulillah-library.blogspot.in/
http://ahlehadith-unnao.blogspot.in/
http://quran-wa-sunnah.blogspot.in/
संकलनः रिसर्च डिवीज़न दारुस्सलाम
अनुवादः अब्दुस्समी मो. हारून
संशोधनः मो. ताहिर हनीफ़

First Edition: December 2007

Supervised by:

Abdul Malik Mujahid

HEAD OFFICE

P.O. Box: 22743, Riyadh 11416 K.S.A. Tel: 00966-1-4033962/4043432 Fax: 4021659
E-mail: darussalam@awalnet.net.sa, riyadh@dar-us-salam.com Website: www.dar-us-salam.com

K.S.A. Darussalam Showrooms:
Riyadh
Olaya branch: Tel 00966-1-4614483 Fax: 4644945
Malaz branch: Tel 00966-1-4735220 Fax: 4735221
Suwailam branch: Tel & Fax-1-2860422

- **Jeddah**
  Tel: 00966-2-6879254 Fax: 6336270
- **Madinah**
  Tel: 00966-04-8234446, 8230038
  Fax: 04-8151121
- **Al-Khobar**
  Tel: 00966-3-8692900 Fax: 8691551
- **Khamis Mushayt**
  Tel & Fax: 00966-072207055
- **Yanbu Al-Bahr** Tel: 0500887341 Fax: 04-3908027
- **Al-Buraida** Tel: 0503417156 Fax: 06-3696124

U.A.E
- **Darussalam, Sharjah U.A.E**
  Tel: 00971-6-5632623 Fax: 5632624
  Sharjah@dar-us-salam.com.

PAKISTAN
- **Darussalam,** 36 B Lower Mall, Lahore
  Tel: 0092-42-724 0024 Fax: 7354072
- **Rahman Market, Ghazni Street,** Urdu Bazar Lahore
  Tel: 0092-42-7120054 Fax: 7320703
- **Karachi,** Tel: 0092-21-4393936 Fax: 4393937
- **Islamabad,** Tel: 0092-51-2500237 Fax: 512281513

U.S.A
- **Darussalam, Houston**
  P.O Box: 79194 Tx 77279
  Tel: 001-713-722 0419 Fax: 001-713-722 0431
  E-mail: houston@dar-us-salam.com
- **Darussalam, New York** 486 Atlantic Ave, Brooklyn
  New York-11217, Tel: 001-718-625 5925
  Fax: 718-625 1511
  E-mail: darussalamny@hotmail.com

U.K
- **Darussalam International Publications Ltd.**
  Leyton Business Centre
  Unit-17, Etloe Road, Leyton, London, E10 7BT
  Tel: 0044 20 8539 4885 Fax:0044 20 8539 4889
  Website: www.darussalam.com
  Email: info@darussalam.com
- **Darussalam International Publications Limited**
  Regents Park Mosque, 146 Park Road
  London NW8 7RG Tel: 0044- 207 725 2246
  Fax: 0044 20 8539 4889

AUSTRALIA
- **Darussalam:** 153, Haldon St, Lakemba (Sydney)
  NSW 2195, Australia
  Tel: 0061-2-97407188 Fax: 0061-2-97407199
  Mobile: 0061-414580813 Res: 0061-2-97580190
  Email: abumuaaz@hotamail.com

CANADA
- **Nasser Khattab**
  2-3415 Dixie Rd, Unit # 505
  Mississauga
  Ontario L4Y 4J6, Canada
  Tel: 001-416-418 6619
- **Islamic Book Service**
  2200 South Sheridan way Mississauga, On
  L5J 2M4
  Tel: 001-905-403-8406 Ext. 218 Fax: 905-8409

MALAYSIA
- **Darussalam International Publication Ltd.**
  No.109A, Jalan SS 21/1A, Damansara Utama,
  47400, Petaling Jaya, Selangor, Darul Ehsan, Malaysia
  Tel: 00603 7710 9750 Fax: 7710 0749
  E-mail: darussalm@streamyx.com

FRANCE
- **Editions & Librairie Essalam**
  135, Bd de Ménilmontant- 75011 Paris
  Tél: 0033-01- 43 38 19 56/ 44 83
  Fax: 0033-01-43 57 44 31
  E-mail: essalam@essalam.com.

SINGAPORE
- **Muslim Converts Association of Singapore**
  32 Onan Road The Galaxy
  Singapore- 424484
  Tel: 0065-440 6924, 348 8344 Fax: 440 6724

SRI LANKA
- Darul Kitab 6, Nimal Road, Colombo-4
  Tel: 0094 115 358712 Fax: 115-358713

INDIA
- **Islamic Books International**
  54, Tandel Street (North)
  Dongri, Mumbai 4000 09, INDIA
  Tel: 0091-22-2373 4180
  E-mail: ibi@irf.net

SOUTH AFRICA
- **Islamic Da'wah Movement (IDM)**
  48009 Qualbert 4078 Durban, South Africa
  Tel: 0027-31-304-6883 Fax: 0027-31-305-1292
  E-mail: idm@ion.co.za

منهج المسلم الجديد

नये मुस्लिम के लिए रहनुमा किताब

संकलन:

रिसर्च डिवीज़न दारूस्सलाम

अनुवाद:

अब्दुस्समी मो. हारून

संशोधन:

मो. ताहिर हनीफ

DARUSSALAM

दारूस्सलाम

इस्लामी किताबों के लिए विश्व निर्देशक संस्था

इस्लाम की परिभाषा

अरबी भाषा में इस्लाम का शाब्दिक अर्थ होता है झुकना, आज्ञा पालन करना। जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अंतिम संदेष्टा के रूप में भेजे गए तब इस्लाम का अर्थ हुआ: वह धर्म जिसे अपने मालिक की ओर से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإِسْلَٰمَ دِينًا﴾

"(ऐ मुहम्मद!) हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूर्ण कर दिया और तुम पर अपनी नेमतें पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म के रूप में स्वीकार किया।'' (मायेदा:३)

अत: इस्लाम वही अन्तिम धर्म है, उस के बाद कोई धर्म नहीं है। जो कोई भी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद ईश्वर के संदेष्टा होने का दावा करे तो वह झूठा है।

इस्लाम का संबन्ध दूसरे आकाशीय धर्मों से:

अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले बहुत

से संदेष्टा भेजे, जिन में से कुछ की चर्चा कुरआन में है और कुछ की नहीं है। मुसलमानों में से यदि कोई भी अल्लाह के संदेष्टाओं में से किसी एक को नकारता है तो वह काफ़िर हो गया। पहले के संदेष्टा किसी अत्याचारी शासक, किसी नगर, किसी गाँव और राष्ट्र या सीमित लोगों के लिए भेजे जाते थे। परन्तु मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने पश्चिम एवं पूरब सभी लोगों की ओर भेजा। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿وَمَآ أَرْسَلْنَـٰكَ إِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا﴾

"हम ने आप को सभी लोगों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा।" (सबा:२८)

और दूसरे आकाशीय धर्म (यहूदी और क्रिश्चयन) की ही प्रकार इस्लाम भी आया ताकि वह बतलाए कि वास्तव सच्चे धर्म में अल्लाह एक ही है, जो मात्र अकेले पूज्य है, जिस का कोई साझी नहीं है, सभी प्रकार की पूजा केवल उसी के लिए अनिवार्य है।

◆ ◆ ◆

ईमान के अरकान (स्तम्भ)

ईमान का शाब्दिक (लफ़्ज़ी) अर्थ है सच मानना, पूर्ण विश्वास करना। लेकिन इस्लाम की परिभाषा में अर्थ यह है कि हृदय से इसको सच मानना, ज़बान से इसका इक़रार करना और हाथ पाँव से उस पर अमल करना अर्थात जिन इबादतों को अल्लाह तआला ने करने का आदेश दिया है उसे करना।

कुरआन एवं हदीस से प्रमाणित है कि सही आस्था (अक़ीदा) के अनुसार ईमान छः अरकान पर सम्मिलित है। इन तमाम के ऊपर विश्वास अनिवार्य है। यदि एक भी कम हुआ तो ईमान ख़त्म है। ईमान के छः अरकान ये हैं:

१. अल्लाह तआला पर ईमान रखना

२. फ़रिश्तों पर ईमान रखना

३. सभी आकाशीय पुस्तकों पर ईमान रखना

४. सभी संदेष्टाओं (रसूलों) पर ईमान रखना

५. आख़िरत (अंतिम दिन) पर ईमान रखना

६. भाग्य के सभी भले-बुरे पर ईमान रखना

अल्लाह तआ़ला पर ईमान का अर्थ यह है कि यह पूर्ण विश्वास करना कि वास्तव में वही पूज्य है, उस के अलावा कोई इस के योग्य नहीं है। क्योंकि वही सभी मनुष्यों को पैदा करने वाला है, उन्हें उनकी जीविका देने वाला है, उन पर दया करने वाला है, उन के छोटे-बड़े सभी मामलों में तदबीर करने वाला है, वह उनके बाहरी और आन्तिरक सभी बातों को जानने वाला है, उन से हिसाब-किताब लेने वाला है। इस प्रकार वह पापियों को उनके पाप पर दंडित करेगा और पुण्य करने वालों को पुरस्कृत करेगा। वास्तव में उसके सिवा कोई पैदा करने वाला नहीं है और न ही उस के सिवा कोई मालिक है। उस ने बहुत सारे संदेष्टाओं को भेजा और पुस्तकों को अपने बन्दों के सुधार हेतु एवं उन्हें इसकी दावत के लिए उतारा, क्योंकि उसी में उनके लिए दुनिया और आख़िरत की कामयाबी है।

इसी प्रकार अल्लाह ने अपने बन्दों पर जो भी इस्लाम के अरकान को फ़र्ज़ क़रार दिया है, उन पर ईमान रखना। जैस नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात के अतिरिक्त और दूसरी बातें जो इस्लामी शरीअत में उल्लिखित है। इस इबादत की वास्वविकता यह है कि अल्लाह ने जिस भी इबादत जैसे प्रार्थना, दुआ, आशा, कुर्बानी करना और मन्नत माँगना आदि का हुक्म दिया है, वह केवल अल्लाह के लिए विशेष रूप से करना।

और अल्लाह पर ईमान का अर्थ यह भी है कि कुरआन और हदीस में अल्लाह के जो भी अच्छे नाम एवं विशेषतायें प्रमाणित हैं उन पर ईमान रखना, साथ ही उन्हीं महान अर्थों में लेना और विशेष करना, जो उनके योग्य है। साथ ही यह कि इन नामों और विशेषताओं में उन की मख़लूक़ से मेल न हो।

अल्लाह तआ़ला की निशानियाँ स्वयं हमारे अन्दर एवं इस समस्त जग के कण-कण में व्याप्ति हैं। कुरआन में अनेकों स्थान पर अल्लाह आदेश देता है कि तुम लोग उसकी महानता और बुद्धिमता की पहचान हेतु अपने ज्ञान और बुद्धि को प्रयोग करो।

तौहीद की किस्में:

आगे यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि तौहीद नाम है अल्लाह तआ़ला को रुबूबियत (एक रब मानना) उलूहीयत (एक मात्र पूज्य मानना) और सभी नाम और विशेषताओं में विशेष करना। इस प्रकार तौहीद के तीन प्रकार हैं:

१. अल्लाह तआ़ला पर ईमान रखना कि वही सब का पैदा करने वाला और जीविका पहुंचाने वाला है और यह कि उसी के हाथ में सभी मामलों की तदबीर करना और जीवित करना और मृत्यु देना आदि है।

२. इस पर ईमान रखना कि वास्तव में पूजा (इबादत) के योग्य वही अल्लाह है। अतः सभी प्रकार की पूजा (इबादतें) मात्र अल्लाह के लिए करना है, जिस का कोई साझीदार नहीं है। जैसे उसी से प्रार्थना करना, डरना और भरोसा आदि करना। तो हमें चाहिए कि हम केवल अल्लाह से ही प्रार्थना करें, उसी पर केवल भरोसा करें, केवल उसी से सहायता माँगें और केवल उसी की शरण माँगें। यह तौहीद का वह प्रकार है जिसे लेकर सभी पैग़म्बर और रसूल (संदेष्टा) आए। जैसाकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولاً أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾

"और हम ने हर गिरोह में रसूल भेजा (जिस ने यह संदेश अल्लाह का लोगों को दिया) कि तुम अल्लाह ही की इबादत करो और तागूत (की इबादत) से बचो।" (नहल:३६)

तागूत का अर्थ है वह सभी कुछ जिस की अल्लाह के सिवा इबादत की जाती है। और तौहीद की यही वह क़िस्म है जिस का नवीन एवं प्राचीन सभी काफ़िरों ने इन्कार किया। जैसाकि कुरआन करीम में है कि वे लोग कहते हैं।

﴿أَجَعَلَ ٱلْأَلِهَةَ إِلَـٰهًا وَٰحِدًا ۖ إِنَّ هَـٰذَا لَشَىْءٌ عُجَابٌ﴾

"क्या इसने इतने सारे देवताओं को एक ही देवता कर दिया है यह तो बहुत आश्चर्यजनक बात है।" (साद:५)

३. अल्लाह के सभी नाम एवं विशेषताओं पर बिना किसी हेर-फेर के ठीक उसी प्रकार ईमान रखना जैसा कुरआन और हदीस में आया है। जैसे कि अल्लाह ने अपना नाम हय्य और कय्यूम रखा है। हमारा कर्तव्य है कि हम यह ईमान रखें कि हय्य अल्लाह के नामों में से एक नाम है और साथ ही यह भी अनिवार्य है कि इस नाम की जो विशेषता है उस पर भी ईमान रखें। अर्थात यह कि वह सदा से जीवित है और उसे कभी भी मृत्यु नहीं आ सकती है।

◆ ◆ ◆

2– फ़रिश्तों पर ईमान रखना

फ़रिश्तों पर ईमान का अर्थ फ़रिश्तों के अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास करना है और यह कि वह अल्लाह के प्राणधारी जीवों में से एक जीव है जो अल्लाह ही की पूजा करते है और सदा उसी की तस्बीह जपते हैं और यह कि "अल्लाह ने जो भी आदेश दिया है उस की अवज्ञा नहीं करते है और जो भी अल्लाह ने आदेश दिया है उसका पालन करते हैं।" और हमारे लिए अनिवार्य है कि विस्तृत रूप से अल्लाह और उस के रसूल ने जिन का भी नाम लिया है, उन सभी पर ईमान रखें। जैसे जिब्रील और मीकाईल आदि। इसी प्रकार उनकी प्राकृतिक विशेषताओं पर भी ईमान रखना अनिवार्य है। अर्थात हम ईमान रखें कि अल्लाह ने उन को नूर (प्रकाश) से पैदा किया है, उन के कई पंख होते हैं जिन की गिनती अलग-अलग है। इसी प्रकार कुरआन और हदीस में उनके कामों की जो चर्चा है, उन पर ईमान रखें। जैसे उनका बिना थके अल्लाह की दिन रात इबादत करना और उसकी तस्बीह करना। इसी प्रकार विश्वास करना कि वे कई प्रकार के हैं जिन में से कुछ को हम बयान करते हैं।

अर्श को उठाने हेतु कर्तव्य पर लगाए गये।

वह्यि (अल्लाह के संदेश) लाने हेतु कर्तव्य पर लगाए गए और वह जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं।

उन में वह भी हैं जो वर्षा लाने हेतु कार्य पर लगाए गए हैं और वह मीकाईल हैं।

और उन में कुछ ऐसे हैं जो सूर फूंकने के कार्य पर लगाए गए हैं।

और उन्हीं में जहन्नम का दारोग़ा भी है।

और उन्हीं में रिज़वान जन्नत का रखवाला भी है।

◆ ◆ ◆

3– किताबों पर ईमान रखना

किताबों पर ईमान यह है कि उस पर पूर्ण विश्वास रखना कि अल्लाह तआला ने अपनी बातों की हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के माध्यम से वह्यि अपने नबियों और रसूलों पर की ताकि वे लोग उसकी बात लोगों तक पहुंचा दें। अल्लाह तआला के कलाम को कभी एक सहीफ़ा में और कभी कई सहीफ़ों में जमा कर दिया गया और उस का नाम "अल-किताब" या "सुहुफ़" रखा गया। अल्लाह की कई किताबें हैं जो अनेकों स्थान और विभिन्न भाषाओं में उतरी। हर उम्मत पर उसकी किताब उसी की भाषा में उतारी गई जिन में सभी मानव की हिदायत, प्रकाश और सफल जीवन का मार्ग दर्शन है। यह तमाम किताबें इसीलिए आईं ताकि वह तौहीद की दावत दें और एक अल्लाह की इबादत का संदेश दें। साथ ही यह कि पुण्य के सभी कार्य किए जायें और पाप के कामों से दूर रहा जाए। इन किताबों पर ईमान इन बातों पर सम्मिलित है:

१. सामूहिक रूप से इस पर ईमान रखना कि अल्लाह ने अपने नबियों पर किताबें उतारी और यह कि उन का अल्लाह की ओर से उतरना बिल्कुल सत्य और हक है।

२. अल्लाह ने जिन किताबों का नाम लिया है उन पर ईमान रखना जैसे कुरआन पर जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा गया। तौरेत पर जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारा गया। इंजील पर जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर उतारा गया। ज़बूर पर जो हज़रत दाऊउ अलैहिस्साम पर उतारा गया। इसी प्रकार इब्राहीम के सहीफ़े पर। फिर यह कि कुरआन इन तमाम किताबों में सब से अच्छी किताब है और अल्लाह की अन्तिम किताब है जो तमाम उन किताबों का निगहबान और ताईद करने वाला है। फिर यह कि यही वह किताब है जिसकी आज्ञा का पालन करना और इस को सच मानना सभी मानव के लिए अनिवार्य है और ये कि तौरेत और इंजील आदि पुस्तकों में हेर-फेर कर दिया गया है जैसाकि कुरआन ने बयान किया है।

३. उनकी सभी बातों को सच मानना जैसे कि वह बातें जो कुरआन में आयी हैं।

◆ ◆ ◆

4– रसूलों पर ईमान रखना

सामूहिक रूप में सभी रसूलों (अल्लाह के संदेष्टा) पर ईमान जरूरी है। अत: हम ईमान रखें कि नि:संदेह अल्लाह ने अपने बन्दों की ओर रसूलों को डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला बना कर भेजा, जो लोगों को इस ओर बुलाते थे कि एक अल्लाह ही की पूजा करें जिस का कोई साझीदार नहीं है। फिर यह भी ईमान रखना कि इन रसूलों में सब से अन्तिम और सर्वश्रेष्ठ हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। जिस प्रकार सभी रसूलों पर सामूहिक रूप से ईमान रखना अनिवार्य है उसी प्रकार उन नबियों पर भी ईमान रखना अनिवार्य है जिनकी चर्चा अल्लाह ने विस्तृत रूप से की है जैसे मुहम्मद, नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा अलैहिमुस्सलाम आदि। और इस पर भी ईमान ज़रूरी है कि तमाम नबियों को अल्लाह की ओर से भेजा जाना बिल्कुल सत्य है। यदि किसी ने इन में से किसी एक भी रसूल या नबी का इन्कार किया तो उसने मानो सभी का इंकार किया।

◆ ◆ ◆

5– आख़िरत के दिन पर ईमान रखना

आख़िरत के दिन पर ईमान का अर्थ यह है कि इस पर विश्वास रखना कि इस दुनिया में मृत्यु के बाद पुनः जीवित होना है और मनुष्य से उस के तमाम कामों का हिसाब-किताब होगा। फिर पापियों को कठोर दण्ड मिलेगा और पुण्य कार्य करने वालों को पुरस्कृत किया जाएगा। आख़िरत पर ईमान में मौत के बाद की वह सभी बातें भी शामिल हैं जिस के बारे में अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया है जैसे क़ब्र की परीक्षा और उस में दिये जाने वाले दण्ड एवं पुरस्कार। साथ ही क़यामत के दिन की वह सारी परेशानियां और मुसीबतें, और वह पुल सिरात जो जहन्नम (नर्क) के ऊपर रखा गया है जिस पर से सभी लोग अपने कर्मों के अनुसार गुज़रेंगे। और मीज़ान और हिसाब पर ईमान ज़रूरी है। साथ ही हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के लिए सिफ़ारिश करना, आप का हौज़े कौसर पर आना जिस के पानी को पीने के बाद कोई कभी प्यासा नहीं होगा, और नेक मोमिनो का अल्लाह को देखना, स्वर्ग (जन्नत) और उस के इनामों और नर्क (जहन्नम) और उस के अज़ाब पर ईमान रखना।

◆ ◆ ◆

6– तक़दीर और क़ज़ा पर ईमान

तक़दीर और क़ज़ा पर ईमान का अर्थ यह है कि जो भी अच्छा या भला है वह सब अल्लाह ही के निर्णय से होता है और कोई भी चीज़ उस की इच्छा के बिना नहीं हो सकती है। और अल्लाह ने इस दुनिया और इस की सभी चीज़ों का और उन का भी जो जन्म लेगा सभी का भाग्य उन के जन्म से पहले ही लिख दिया है। इस के बावजूद अल्लाह ने अपने बन्दों को कुछ बातों के करने और कुछ से दूर रहने का आदेश दिया है। फिर यह कि अल्लाह ने -उनकी इच्छानुसार- उन के अपने कार्यों के करने हेतु इख़्तियार देते हुए भी उस पर हिसाब-किताब लेने का वादा किया है। (और इस्लाम में यही इबादत का अर्थ है) और अल्लाह बन्दों के कार्यों को पैदा करने वाला है और बन्दे इन कार्यों के करने वाले हैं। और अल्लाह अपने बन्दों के बारे में उनके जन्म से पहले ही पहले से उनकी अच्छाई और बुराई को जानता है जो वह करेगा। इसी प्रकार स्वर्ग एवं नर्क का योग्य कौन है उसको भी वह जानता है। प्रत्येक को उनके कर्मों के अनुसार पुरस्कृत अथवा दण्डित किया जाएगा। और यह सभी बातें अल्लाह की किताब में लिखी हैं।

तक़दीर पर ईमान रखने के अनेकों लाभ हैं, जैसे कि एक मोमिन जब यह जान लेता है कि अल्लाह ने उस के भाग्य में वही लिखा है जो उसके लिए अच्छा है तो यह उसको प्रसन्न रखता है। इसी प्रकार भाग्य पर विश्वास से मोमिन में बहादुरी आती है फिर वह मृत्यु से नहीं डरता, क्योंकि वह जानता है कि उसकी मौत का समय निश्चित है, और ये कि जो अच्छा भला उसके साथ हुआ है वह होना ही था और जो नहीं हुआ उसे भी होना ही था। उसको विश्वास होता है कि यदि समस्त संसार के लोग उस को लाभ अथवा हानि पहुंचाना चाहें तो भी कुछ लाभ अथवा हानि नहीं पहुंचा सकते, हाँ केवल उतना ही जितना अल्लाह ने उस के भाग्य में लिख दिया है।

◆ ◆ ◆

इस्लाम के अरकान

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

> "इस्लाम का आधार पाँच चीज़ों पर है: इस बात की गवाही देना कि वास्तव में पूजा के योग्य अल्लाह के अलावा कोई नहीं है और ये कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) हैं। और नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना।''

इस प्रकार इस्लाम के पाँच अरकान हैं, वे ये हैं:

१. इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा इबादत के लायक़ कोई नहीं है और ये कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

२. पाँच फ़र्ज़ नमाज़ों को क़ायम करना।

३. ज़कात देना।

४. हज करना।

५. रमज़ान के रोज़े रखना।

पहला रुक्न:

इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (इबादत के लायक़) नहीं और निःसंदेह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

ला इलाह इल्लल्लाह इस्लाम धर्म का मूल आधार है और उस के अरकान में से सब से पहला रुक्न और ईमान की शाख़ाओं में से सर्वोच्च शाख़ा है। इसे देकर अल्लाह ने सभी रसूलों अलैहिमुस्सलाम को भेजा जिन में सब से अन्त में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आए। और ला इलाह इल्लल्लाह का सही अर्थ है कि वास्तव में अल्लाह के अतिरिक्त कोई माबूद (इबादत के लायक़) नहीं है। इस के दो हिस्से हैं:

१. **नकारात्मक:** और वह (ला इलाह) के इस कथन में है जिस में अल्लाह के सिवा सभी की इबादत या पूजा अर्चना को नकारा गया है।

२. **सकारात्मक:** और वह (इल्लल्लाह) के इस कथन में है जिस में इबादत केवल अल्लाह के लिए साबित किया गया है जिसका कोई साझी नहीं है। अत: माबूद केवल अल्लाह ही है। और ये कि इबादत के सभी प्रकार अल्लाह ही के लिए ख़ास है किसी और के लिए नहीं। इस प्रकार सज्दा (अपने मस्तक को ज़मीन पर टेकना), दुआ, कुर्बानी देना और मन्नतें मांगना अल्लाह के सिवा किसी के लिए जायज़ नहीं है। और इस प्रकार लोग ला इलाह इल्लल्लाह के सम्बंध से तीन प्रकार के हुए।

१. जो यह कलिमा पूरे विश्वास से कहे, उसके अर्थ को जान कर कहे

और उसके तकाज़ों के अनुरूप कार्य करे वह वास्तव में सच्चा मुसलमान है।

२. जो इस पर ठोस विश्वास के बिना अमल करे वह मुनाफ़िक़ है।

३. और जो इसके विपरीत और विरूद्ध कार्य करे वह मुश्रिक काफ़िर है।

गवाही का दूसरा हिस्सा है कि आदमी यह इक़रार करे कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल्लाह के वह बन्दे और उस के अंतिम संदेष्टा हैं जो सत्य के साथ पूरे विश्व के लोगों की ओर भेजे गए हैं और सभी मोमिनों की ओर भेजे गए हैं जिनकी आज्ञा का पालन करना उनके लिए अनिवार्य है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

﴿وَمَآ ءَاتَىٰكُمُ ٱلرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَىٰكُمْ عَنْهُ فَٱنتَهُوا۟ۚ﴾

"और जो कुछ भी रसूल तुम्हें दें उसे ले लो और जिस से रोकें उस से रुक जाओ।'' (हश्र:७)

दूसरा रुक्न: नमाज़

इस्लाम के अरकान में से नमाज़ दूसरा रुक्न है जो सभी व्यस्क सहीह अक़्ल वाले मुसलमानों पर वाजिब है और उस का छोड़ने वाला -ज्ञानियों के एकमत कथनानुसार- काफ़िर समझा जाएगा। नमाज़ ही पहली चीज़ है जिस के सम्बन्ध में सर्वप्रथम क़यामत के दिन प्रश्न होगा।

अत: मुसलमानों पर वाजिब है कि पाँचों नमाज़ को वक़्त पर अदा करे। पुरूष जमाअत के साथ मस्जिद में नमाज़ पढ़ें और महिलायें घरों में नमाज़ पढ़ें। पाँचों नमाज़ों की रकअतें इस प्रकार हैं:

सुबह: दो रकअत

ज़ोहर: चार रकअत

असर: चार रकअत

मग़रिब: तीन रकअत

इशा: चार रकअत

नमाज़, पाकी और सफ़ाई के मसायल हम दूसरी किताब में बतायेंगे।

तीसरा रुक्नः ज़कात

ज़कात इस्लाम के अरकान में से तीसरा रुक्न है जो मुसलमान पर तब अनिवार्य होता है जब वह निसाब वाला हो जाए और उस पर एक वर्ष बीत जाए। जो इस के अनिवार्य होने को नकारते हुए ज़कात न दे वह काफ़िर और इस्लाम से ख़ारिज है।

वह माल जिस में ज़कात अनिवार्य है:

ज़कात सोना, चाँदी, व्यापार के सामान, चौपाया और धरती से निकलने वाली चीज़ें जैसे अनाज, फल और कान से निकलने वाली चीज़ों पर अनिवार्य है।

सोने और चाँदी पर तब ज़कात वाजिब है जब वह निसाब अर्थात ८५ ग्राम हो और चाँदी ५९५ ग्राम हो। तो जो भी सोना अथवा चाँदी के निसाब का मालिक हो जाए तो उसके लिए ज़रूरी है कि उस समय बाज़ार के भाव के अनुसार दोनों की ज़कात नकदी के रूप में अदा कर दे।

इसी प्रकार नकदी जो निसाब को पहुंच जाए उस में भी ज़कात है और उसका निसाब यह है कि वह पचासी ग्राम सोने के मूल्य के

अनुसार हो जाए। और साथ ही यह कि उस पर पूरा एक वर्ष बीत जाए। सोने, चाँदी या नक़दी में ज़कात ढाई प्रतिशत के हिसाब से वाजिब है।

चौथा रुक्नः रमज़ान के रोज़े

रोज़ा नाम है फ़ज्र के तुलू होने से लेकर सूर्यास्त तक खाने, पीने महिला से सम्भोग करने और हर उस चीज़ से रुकने का नाम है जिस से रोज़ा टूट जाता है। और रमज़ान का रोज़ा वाजिब है और मुसलमान पर इस के वाजिब होने के लिए निम्नलिखित तीन शर्तें हैं:

रमज़ान के रोज़े रखने की शर्तें:

१. यह कि मुसलमान व्यस्क हो।

२. यह कि वह सही बुद्धि वाला हो।

३. यह कि वह स्वस्थ हो रोगी न हो।

४. यह कि वह मुक़ीम (घर पर) हो यात्री न हो।

५. यह कि वह उसकी बिना अधिक कठिनाई के शक्ति रखने वाला हो।

६. यह कि महिला हैज़ (मासिक धर्म) और निफ़ास (बच्चा जनने के बाद निकलने वाला ख़ून) से पाक और पवित्र हो।

पाँचवां रुक्नः हज

हज का हुक्म एवं उस का महत्वः

हज हर मुस्लिम पुरूष एवं महिला पर पूरे जीवन में एक बार वाजिब है। यह इस्लाम के पाँच अरकान में से पाँचवां है। अल्लाह की अति

निकटता बढ़ाने वाले जितने भी कार्य हैं हज उन में से एक कार्य है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जिस ने हज किया फिर उस ने कोई बुरा कार्य नहीं किया और न ही पत्नी से मिला तो वह हज करके इसी प्रकार वापस होता है जैसे उसकी माँ ने उस को उसी दिन जन्म दिया हो।" (बुख़ारी)

हज की शर्तें:

आदमी पर हज निम्नलिखित शर्तों के साथ वाजिब होता है।

१. इस्लाम

२. व्यस्क होना

३. बुद्धि और समझ होना

४. शक्ति होना और ख़र्च करने की ताक़त हो जिस में आने जाने और यात्रा के ख़र्च का पैसा होना शामिल है। साथ ही इस के अलावा भी पैसे हों ताकि वे लोग जिन पर ख़र्च करने का दायित्व उस पर रखा गया हो, उन्हें दे सके। और शक्ति रखने वाली बातों में यात्रा मार्ग का शान्त होना और स्वस्थ होना भी है। अत: वह व्यक्ति हज नहीं करे यदि किसी रोग से ग्रस्त हो। इसी प्रकार वह महिला भी जिस के साथ उस का महरिम न हो।

◆ ◆ ◆

الفقه الاسلامي

इस्लामी

अहकाम

नमाज़

नमाज़ इस्लाम के पाँच अरकान (अंग) में से एक रुक्न है। अल्लाह तआ़ला ने दिन और रात में पाँच नमाज़ों को अनिवार्य किया है। यह नमाज़ बिना तहारत (पवित्रता) के सही नहीं होगी, इसलिये सब से पहले पवित्रता एवं पाक होने से संबन्ध ज्ञान आवश्यक है।

तहारत (पवित्रता) की परिभाषाः

सभी प्रकार की गंदगियों एवं नापाकी (अपवित्रता) से पाक-साफ़ होने का नाम तहारत है, जो प्रत्येक मुसलमान पर अनिवार्य है।

नापाकी के प्रकारः

नजासात (नापाकी) नजासत का बहुवचन शब्द है। नजासत वही है जो मनुष्य के दोनों गुप्तांगों में से किसी एक से निकले, जैसे पेशाब, पाख़ाना (शौंच), वदी, मजी (आगे के गुप्तांगों से उत्तेजना या उसके बिना निकलने वाला तरल आदि) इसी प्रकार हर उस पशु का पेशाब, लीद, गोबर आदि जिसका माँस खाना जायज़ नहीं है। इसी प्रकार बहुत ख़ून, पीप, उल्टी (क़ै) जिस का रंग बदला हुआ हो, साथ ही

मुर्दार के सभी प्रकार एवं उसके अंश सभी नापाक हैं। मुर्दार का चमड़ा जब दिबागत (पका कर पवित्र) कर दिया जाये (पानी नमक आदि से) तो वह पवित्र है।

पाकी किस से प्राप्त होगी?

पाकी दो चीज़ से प्राप्त होगी।

१. पानी से, जैसे वर्षा का पानी एवं समुद्र आदि का पानी।

इसी प्रकार इन से भी काम लिया जा सकता है:

(क) प्रयोग किया हुआ पानी अर्थात स्नान करने वाले एवं वज़ू करने वाले के शरीर से गिरा पानी।

(ख) वह पानी जिस में कोई पवित्र चीज़ मिल गई हो परन्तु वह अपने रूप में बाक़ी हो।

(ग) वह पानी जिस में नापाकी मिल गई हो परन्तु उस की तीन विशेषता -रंग, स्वाद और गंध- में से कोई न बदला हो। यदि उस से बदल जाए तो उस से पाकी प्राप्त करना जायज़ नहीं होगा।

२. पाक मिट्टी और वह पवित्र पाक धरती का ऊपरी भाग है जैसे मिट्टी, रेत, पत्थर या कीचड़। पवित्र मिट्टी से पाकी प्राप्त करना तभी सही होगा जब पानी न मिले अथवा बीमारी आदि के कारणों से उस पानी से काम लेना कठिन हो।

शौंच करने के तरीके:

इस के कुछ तरीके़ नीचे बताए जाते हैं:

१. शौंचालय में प्रवेश करने से पहले यह दुआ पढ़े:

«بِسْمِ اللهِ اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ»

"अल्लाह के नाम से शुरू, ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ राक्षस जिन्नों एवं जिन्नियों से"

शौंचालय में जाते हुये पहले बायां पैर रखे।

२. शौंचालय से निकलने के बाद यह दुआ पढ़े:

«غُفْرَانَكَ»

"ऐ अल्लाह मैं तेरी क्षमा चाहता हूँ।"

निकलते समय पहले दायां पैर निकालें।

३. अपने साथ ऐसी चीज़ न रखें जिस में अल्लाह का नाम हो। परन्तु उस के खो जाने का डर हो तो रख सकते हैं।

४. क़िब्ला (पश्चिम) को अपने सामने अथवा पीछे न रखें।

५. गुप्तांगों को सामान्य लोगों से छुपाना और उस में कुछ भी सुस्ती नहीं बरतना। पुरूष का गुप्त भाग नाभि से लेकर नीचे घुटने तक है जब कि महिला अपने पूरे-शरीर को ढकेगी।

६. शौंच अथवा पेशाब करने की हालत में अपने बदन और कपड़े को पेशाब अथवा पाख़ाना के लगने से बचाना।

७. शौंच करने के बाद पानी से सफ़ाई करना। यदि पानी न मिले तो टीशू काग़ज़ अथवा मिट्टी आदि से इस प्रकार सफ़ाई करना कि उस गंदगी का प्रभाव समाप्त हो जाए। यदि टीशू

काग़ज़ आदि और पानी दोनों एक साथ कोई प्रयोग करना चाहे तो पहले काग़ज़ का प्रयोग करे फिर पानी ले, यह तरीक़ा सफ़ाई का सब से अच्छा है।

८. सफ़ाई प्राप्त करने में बायें हाथ से काम ले और दोनों गुप्तांगों को एकहरा धोयें।

यहाँ कुछ ऐसी इबादतों का बयान है जो मुसलमान के लिए बिना वज़ू किए सही नहीं हो सकता है।

१. फ़र्ज़ (अनिवार्य) एवं नफ़्ल (गैर अनिवार्य) नमाज़

२. क़ुरआन का छूना

३. काबा का तवाफ़ (परिक्रमा) करना

और वह पानी जिस से वज़ू किया जा सकता है वह सब पानी है जिस से रंग, स्वाद और गंध परिवर्तित नहीं हुआ हो। जैसे हम ने बयान किया।

वुज़ू का तरीक़ा:

- दिल में नीयत करें और कहें "बिस्मिल्लाह"
- दोनों हथेलियों को तीन बार धोयें
- तीन बार कुल्ली करे
- तीन बार नाक में पानी दें
- चेहरे को तीन बार धोयें
- दायें हाथ को कुहनी तक तीन बार धोयें

- बायें हाथ को कुहनी तक तीन बार धायें
- पूरे सिर को आगे से पीछे फिर पीछे से आगे तक मसह (भीगे हाथ को गुज़ारना) करें।
- दोनों कानों के अन्दर बाहर दोनों हाथों की अंगुलियों से मसह करना, दोनों कान के मसह करते समय हाथ को भिगाना अनिवार्य नही है, इसलिए कि कान सिर के भाग ही से है।
- दायें पैर को टखने तक धोना तीन बार, साथ ही अंगुलियों में ख़िलाल करना।
- बायें पैर को टखने तक अंगुलियों के ख़िलाल के साथ तीन बार धोना।

वुज़ू को तोड़ने वाली चीज़ें:

और वह चीज़ें जिस से वुज़ू समाप्त हो जाता है ये हैं:

१. हर वह चीज़ जो आगे अथवा पीछे के गुप्तांगों से निकले

२. गहरी नींद

३. बुद्धि का समाप्त होना पागलपन, नशा अथवा बेहोशी से

४. बिना रुकावट के गुप्तांगों को छूना।

तयम्मुम (मिट्टी से पवित्रता प्राप्त करना):

अल्लाह तआ़ला ने पानी न मिलने अथवा उसके प्रयोग करने पर रोग के कारण मजबूर होने की हालत में तयम्मुम को जायज़ क़रार दिया है। अत: यह वुज़ू की ओर से पर्याप्त है। इसी प्रकार वह व्यक्ति जो अपवित्र हो और उसके लिए गुस्ल अनिवार्य हो या वह औरत जो

हैज़ (मासिक धर्म) और निफ़ास (बच्चा जनने के बाद बहने वाला ख़ून) से पवित्र होना चाहे, उस के लिए भी तयम्मुम जायज़ है।

तयम्मुम का तरीक़ा:

- बिना बोले दिल में तयम्मुम का इरादा (नीयत) करें।
- फिर बिस्मिल्लाह कहें।
- दोनों हाथ को पवित्र मिट्टी पर मारें और दोनों में फूकें।
- अपने दोनों हाथ से अपने चेहरे को एक बार मसह (पोछें) करें।
- अपने दोनों हाथों की कलाई तक मसह एक बार करें।

जिन के कारण तयम्मुम जायज़ होता है:

१. जब पानी न मिले

२. जब घाव हो या रोग हो और डर हो कि यदि पानी का प्रयोग किया तो रोग बढ़ सकता है या ठीक होने में देर हो सकती है।

३. जब पानी बहुत ठंडा हो और उस को गर्म करना संभव न हो और डर हो कि ऐसे ठंडे पानी के प्रयोग से बीमार पड़ सकते हैं।

४. पानी तो मौजूद हो लेकिन इतना ही हो जो पकाने, आटा गूंधने के काम आ सके।

पाँच वक़्त की नमाज़ें और उनके रकअतों की संख्या:

मुसलमान पर पाँच वक़्त की नमाज़ उस के नियमित समय पर और समय समाप्त होने से पहले तक अनिवार्य है। पाँचों नमाज़ों की रकअतें निम्नलिखित है:

सुबह: दो रकअत

ज़ुहर: चार रकअत

असर: चार रकअत

मग़रिब: तीन रकअत

इशा: चार रकअत

नमाज़ का तरीक़ा:

- मैं नमाज़ की दिल से नीयत (इरादा) करता हूँ।
- मैं अपने चेहरे और दोनों पैरों को क़िब्ला की ओर करता हूँ।
- मैं अपने दोनों हाथ दोनों कानों के बराबर ले जाऊँ और कहूँ "अल्लाहो अकबर"
- अपने दायें हाथ को बायें हाथ पर सीने के ऊपर रखूँ।
- सूरह फ़ातिहा पढ़ूँ और उसके बाद क़ुरआन में से, जो सरल हो पढ़ूँ।
- फिर रुकूअ (नीचे झुकते हुए) कहूँ "अल्लाहो अकबर" और रुकूअ में तीन बार "सुब्हान रब्बियल अज़ीम" कहूँ। रुकूअ में ऐसे रहूँ कि मेरा सिर और पीठ बराबर रहे और दोनों घुटनों को दोनों हाथों से पकड़े रहूँ।
- रुकूअ से "समिअल्लाहु लिमन हमिदह" कहते हुये उठूँ साथ ही अपने दोनों हाथों को अपने दोनों कानों तक उठाऊँ और जब पूरी तरह से सीधा खड़ा हो जाऊँ तो कहूँ "रब्बना व लकल हम्द"।

- सज्दा (ज़मीन पर मस्तक टेकना) करते हुए "अल्लाहु अकबर" कहूँ और सज्दा शरीर के सात अंगों पर हो (नाक के साथ मस्तक, दोनों हाथ, दोनो घुटना और दोनों पैरों की अंगुलियां)। और सज्दे में तीन बार या उस से अधिक कहूँ "सुब्हान रब्बियल आला" और दुआयें (प्रार्थनायें) करूँ जो भी दुनिया या आख़िरत के सम्बंध में चाहूँ।
- फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए बराबर अपने बायें पैर पर बैठूँ, और दायें पैर को खड़ा कर के अंगुलियों को ऐसे मोड़ूँ कि वह क़िब्ला की ओर रहें। और अब तकबीर के समय दोनों हाथों का उठाना ज़रूरी नहीं है।
- फिर दूसरा सज्दा "अल्लाहु अकबर" कहते हुए करूँ और सज्दे में "सुब्हान रब्बियल आला" कहूँ।
- दूसरी रकअत के लिए "अल्लाहु अकबर" कहते हुए उठूँ, और इस दूसरी रकअत को ठीक उसी प्रकार से पढ़ूँ जिस प्रकार से पहली रकअत में पढ़ा था।
- दो रकअत के अदा करने के बाद तशह्हुद (दो या चार रकअत के बीच बैठना) के लिए बैठूँ। यही अन्तिम तशह्हुद होगा जब दो रकअत वाली जैसे सुबह की नमाज़ हो। लेकिन जब तीन रकअत (मग़रिब) वाली नमाज़ हो तो मैं (तशह्हुद) से उठूँ और एक रकअत पूरी करूँ, फिर अन्तिम तशह्हुद के लिए बैठूँ, इस प्रकार तीन रकअत वाली नमाज़ में तशह्हुद के लिए दो बार -(बीच में बैठना और अन्त में बैठना)- बैठना है, और चार रकअत वाली नमाज़ों -(ज़ोहर, असर, इशा)- में भी तशह्हुद के वास्ते पहली

दो रकअत के बाद बीच में बैठना है, फिर अन्तिम दो रकअत के बाद अन्त में बैठना है।

- तशह्हुद (की दुआयें) समाप्त होने के बाद दायीं ओर "अस्सलामों अलैकुम व रहमतुल्लाह" कहते हुए सलाम फेरूँ।
- फिर बायीं आरे "अस्सलामों अलैकुम व रहमतुल्लाह" कहते हुए सलाम फेरूँ।

तशह्हुद की दुआः

अत्तहीयातो लिल्लाहे वस्सलवातो वत-तैय्येबातो, अस्सलामो अलैक ऐय्योहन नबीय्यो व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू, अस्सलामो अलैना व अला इबादिल्लाहिस सालेहीन, अशहदो अल ला इलाह इल्लल्लाहो व अशहदो अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद पढ़ने की दुआः

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मद व अला आले मुहम्मद, कमा सल्लैता अला इब्राहीम व अला आले इब्राहीम इन्नका हमीदुम मजीद, अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मद व अला आले मुहम्मद कमा बारकत अला इब्राहीम व अला आले इब्राहीम इन्नका हमीहुम मजीद।

◆ ◆ ◆

जुमा की नमाज

जुमा की नमाज़ का हुक्मः

जुमा की नमाज़ मर्दों पर वाजिब है, यह दो रकअत है।

जुमा की नमाज़ अनिवार्य होने की शर्तेंः

जुमा की नमाज़ दो रकअत होगी जो ज़ोहर की नमाज़ के स्थान पर अदा की जाएगी। और यह पुरूष मुसलमान, व्यस्क, स्वस्थ और अपने घर में मोक़ीम कि लिए वाजिब (अनिवार्य) है। यह महिलाओं के लिए वाजिब नही है और न ही बच्चों, मरीज़ों और यात्रियों के लिए अनिवार्य है। और इसे मस्जिद में अदा की जाएगी। जिस में नमाज़े जुमा से पहले दो ख़ुतबे (प्रवचन) होंगे, इन दोनों के मध्य में थोड़ी देर के लिए बैठना है।

ईदैन (ईदुल फ़ितर और ईदुल अज़हा) की नमाज़ः

ईदैन से अभिप्राय ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा है। रमज़ान के बाद आने वाले शव्वाल महीना की पहली तारीख़ को ईदुल फ़ित्र होती है।

यह ख़ुशी मनाने का दिन होता है, क्योंकि अल्लाह ने अपने बन्दों (दासों) पर उपकार किया और रमज़ान के महीना में रोज़ा और क़ियाम (रमज़ान की रातों की ख़ास नमाज़) के लिए जो शक्ति विशेष दी। ईदुल अज़हा ज़िलहिज्जा (अरबी कैलेन्डर का आख़िरी महीना) के दसवें दिन मनाई जाती है। इस दिन मुसलमान कुर्बानी के जानवरों की कुर्बानी देते हैं।

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु का कहना है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना आए, यहाँ लोगों के लिए दो विशेष दिन थे जिस में वे खेल-कूद करते थे। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारे लिए अल्लाह ने इन दोनों से श्रेष्ठ दो दिन अर्थात फ़ित्र का दिन और कुर्बानी का दिन दिया।

ईदैन की नमाज़ का हुक्म और उनका तरीक़ाः

ईदैन की नमाज़ सुन्नते मोअक्कदह हैं -जिस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सदैव किया है- और इन नमाज़ों के लिए महिलाओं एवं बच्चों को भी ले जाते थे। इस का समय सूरज के एक नेज़ा के समान बुलन्द होने से लेकर ज़वाल (सूरज की ठीक सिर के ऊपर आने) तक है। इस की दो रकअतें हैं, इस में अज़ान और इक़ामत नहीं है। तकबीर एहराम (पहली बार अल्लाहु अकबर कहना) के बाद और नमाज़ में पढ़ने से पहले इमाम सात बार तकबीर "अल्लाहु अकबर" कहे। पीछे नमाज़ पढ़ने वाले भी तकबीर कहें और दूसरी रकअत में पाँच बार दूसरी रकअत के क़ियाम के तकबीर और पढ़ने से पहले तकबीर कहें। जब नमाज़ पढ़ लें तो

(इमाम) खड़ा हो और लोगों को ख़ुत्बा (प्रवचन) दें। फिर थोड़ी देर बैठें फिर खड़ा हो फिर दूसरा ख़ुत्बा दें और उस के बाद घर वापस हो और सभी लोग भी वापस हों। ईदैन की नमाज़ मैदान में अदा की जायेगी। वर्षा आदि कारणों से मस्जिद में भी पढ़ना जायज़ है और जिस की यह नमाज़ जमाअत से छूट जाए वह चार रकअत अलग से पढ़े।

◆ ◆ ◆

مختصر سيرة الرسول ﷺ

रसूल ﷺ की संक्षिप्त जीवनी

रसूल ﷺ का संक्षिप्त जीवन–परिचय

इस्लाम से पूर्व अरब द्वीप के वासी मूर्तियों की पूजा करते थे। उन में प्रसिद्ध मूर्तियां लात, उज़्ज़ा, हुबल और मनात की थीं। अरबवासियों में कुछ यहूदी एवं कुछ मसीही धर्म के मानने वाले थे। कुछ संख्या उन की भी थी जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्म पर थे। इस्लाम से पूर्व अरब के लोगों में इस बिगाड़ का कारण यह था कि वे लोग जिहालत, अत्याचार एवं अन्धकार में जी रहे थे, जहाँ सबल निर्बलों पर अत्याचार करता था, धनवान निर्धनों एवं भूकों के अधिकार ले लेता था और महिलाओं के साथ दासियों का सा व्यवहार होता था। इसी समय रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्म हुआ।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नसब एवं जनमः

आप का नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की माता का नाम आमिना बिन्त वह्ब बिन अब्द मुनाफ़ है। आप प्रसिद्ध क़बीला क़ुरैश से थे।

आप का जन्म नौ रबीउल अव्वल सोमवार के दिन हुआ। ईस्वी सन् ५७१ था। आप अनाथ पैदा हुए थे क्योंकि जब वे अपनी माता के पेट में ही थे कि आप के पिता की मृत्यु हो गई।

आप को दूध पिलाने वालियाँ:

सर्वप्रथम आप को दूध पिलाने वाली आप की माता आमिना थीं। फिर आप को अबू लहब की दासी सोवैबा ने दूध पिलाया, जिस को अबू लहब (आप के चचा) ने आप के जन्म की ख़ुशी में आज़ाद कर दिया। तीसरी दूध पिलाने वाली हलीमा सादिया थीं, जो आप को अपने साथ देहात ले गईं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रहने से उन के घर में बहुत बरकत आ गई थी। जब आप दो वर्ष के हुए तो हलीमा ने आप का दूध छुड़ा दिया, परन्तु आप की माँ की अनुमति से कि कहीं मक्का में वह बीमार न पड़ जायें, अपने पास ही रखा। मगर वास्तव में बात यह थी कि उन के घर में आप के आने से जो बरकत थी, वह चाहती थीं कि आप अधिक से अधिक दिन यहाँ रहें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की माता मान गयीं, इस प्रकार आप हलीमा के यहाँ चार वर्ष तक रहे।

आप की माता का देहांत:

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की माता को मदीना में अपने सम्बंधियों से मिलने की इच्छा हुई। फिर वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर यात्रा पर निकलीं। मक्का वापसी के मार्ग में वह बीमार पड़ गईं और बीमारी अधिक बढ़ गई यहाँ तक कि उन की मृत्यु हो गई। मक्का एवं मदीना के मध्य अबवा में उन को दफ़ना दिया गया। उस समय आप की आयु छः वर्ष की थी।

नबूवत (नबी बनाये जाने) की ख़ुशख़बरी:

मूर्तियों की पूजा से अल्लाह ने अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुरक्षित रखा, यही कारण है कि आप ने कुरैश के

पूजा-पाठ में कभी भी भाग नहीं लिया और न ही वहाँ के युवाओं के खेल-कूद एवं अन्य बुरे कार्यों में भाग लिया। वहाँ के युवा शराब पीने एवं कुकृत्य आदि करने में एक-दूसरे से प्रतियोगिता करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस समाज के बिगड़ने एवं उनकी बिगड़ी आस्थाओं के प्रति पूर्ण ज्ञान था, इसी कारण से आप कुरैश से अलग रहते थे और हिरा (पहाड़) की गुफ़ाओं में एकान्त में बैठे रहते थे जहाँ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्मानुसार इबादत और पूजा किया करते थे। जब आप की उम्र चालीस वर्ष की हुयी तब आप के लिये नबूवत की निशानियां एवं ख़ुशख़बरी स्पष्ट होने लगीं। जैसे आप जो भी सपना देखते वह पूर्ण रूप से सच होता था। उन्हीं में से एक बात यह थी कि जब आप अपनी किसी आवश्यकता के लिये निकलते और जिस पत्थर या पेड़ के निकट से गुज़रते वे सभी आप को कहते: अस्सलामो अलैक या रसूलुल्लाह! आप दायें और बायें देखते परन्तु पत्थर और पेड़ के अलावा किसी दूसरे को नहीं देखते।

वह्यि का उतरना:

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के महीना में हिरा गुफा के अन्दर ज्ञान-ध्यान में लीन थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हज़रत जिब्रील (अल्लाह का दूत) आप के पास वह्यि (अल्लाह का संदेश) लेकर आए। सर्वप्रथम आप पर कुरआन का जो भाग उतरा वह यह था:

﴿ٱقْرَأْ بِٱسْمِ رَبِّكَ ٱلَّذِى خَلَقَ ﴿١﴾ خَلَقَ ٱلْإِنسَـٰنَ مِنْ عَلَقٍ ﴿٢﴾ ٱقْرَأْ
وَرَبُّكَ ٱلْأَكْرَمُ ﴿٣﴾ ٱلَّذِى عَلَّمَ بِٱلْقَلَمِ ﴿٤﴾﴾

"अपने रब के नाम से पढ़िये, जिस ने मानव को पैदा किया ख़ून के लोथड़े से, पढ़िये आप का रब सब से दयालु है जिस ने कलम के माध्यम से सिखलाया'' (अलक़ १-४)

कुछ दिनों के लिये वह्यि बन्द हो गई। फिर जिब्रील अलैहिस्सलाम सूरह मुदस्सर लेकर आए जिस में अल्लाह ने आप को आदेश दिया कि आप लोगों को डरायें और यह संदेश पहुंचा दें। अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلْمُدَّثِّرُ ۝ قُمْ فَأَنذِرْ ۝ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝﴾

"ऐ चादर तान कर सोने वाले खड़े हो जाईये और डराईये और अपने रब की बड़ाई बयान कीजिये।'' (मुदिस्सर: १-३)

चूंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कौम और समाज के लोग मूर्तियों के प्रति अति कठोर विश्वास रखते थे, अत: जो लोग इन की पूजा छोड़ने के लिए कहते तो उन से कठोर लड़ाई करते और संभवत: इसी कारण से आप की हत्या भी कर सकते थे इसीलिये अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह आदेश दिया कि आप प्रारम्भ में यह निमन्त्रण गुप्त रूप से लोगों को दें। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हीं को निमन्त्रण (दावत) देते जिन पर अपने लोगों में से आप को विश्वास होता था। अपने मित्रों एवं परिचितों में से जिन में आप अच्छाई का चिन्ह देखते उन्हें अपनी बात पेश करते। इस प्रकार आप पर कुछ लोग ईमान लाये। महिलाओं में सर्वप्रथम आप की पत्नी हज़रत ख़दीजा रज़ि अल्लाहु अन्हा ईमान लाईं। आज़ाद पुरूषों में सर्वप्रथम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु ईमान लाए।

बच्चों में सर्वप्रथम हज़रत अली रज़ी अल्लाहु अन्हु ईमान लाए और गुलामों में से सर्वप्रथम ज़ैद बिन हारिसा रज़ि अल्लाहु अन्हु ईमान लाए। गुप्त रूप से इस्लाम की ओर निमन्त्रण (दावत) देने का कार्य तीन वर्ष तक चला।

खुले आम दावत:

तीन वर्षों तक गुप्त रूप से दावत देने के पश्चात, अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्पष्ट रूप से दावत देने का आदेश दिया जिसकी शुरूआत अपने संम्बन्धियों से हो। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ ٱلْأَقْرَبِينَ﴾

"और अपने सम्बन्धियों को डराईए।'' (शुअरा:२१४)

फिर आप ने बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब पर इस्लाम पेश किया। फिर अल्लाह ने आदेश दिया कि आप सभी लोगों को खुले रूप से दावत दीजिये और उन्हें अल्लाह की ओर बुलाईए। उस समय यह आयत उतरी:

﴿فَٱصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ ٱلْمُشْرِكِينَ﴾

"आप को जो कुछ भी आदेश होता है आप उसका पालन करते जायें और मुश्रिकों से अलग रहें।'' (हिज्र:९४)

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रब के आदेश का पालन किया और स्पष्ट रूप से सभी मुश्रिकों के बीच और उन की सभाओं में जाकर इस्लाम की दावत दी और उनके पास कुरआन की आयत

पढ़ते। उनके सामने अल्लाह की इबादत करते। फिर क्या था लोग एक के पश्चात एक अल्लाह के दीन में दाख़िल होने लगे।

काफ़िर लोग इस्लाम के विरोधी होते हैं:

कुरैश इस्लाम के कट्टर विरोधी होने लगते हैं जब आप खुले रूप से उन को दावत देते हैं। इस के लिए वे आप का हंसी मज़ाक़ उड़ाने लगे, आप पर ग़लत आरोप लगाने लगे, ताकि वे लोग जो आप के साथ हो गए थे आप से अलग हो जायें। उन्होंने आप को जादूगर और पागल कहा, उन्होंने कहा कि निःसंदेह क़ुरआन आप को शैतान (राक्षस) बताते हैं। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी से बात करना चाहते तो वे लोग आप के पास आकर चीख़ते और हंगामा करते ताकि लोग आप की बात को न सुनें।

जब काफ़िरों ने देख लिया कि इस सब से उन लोगों को कोई लाभ नहीं मिल रहा है और मुसलमानों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ रही है, तो उन लोगों ने दूसरा माध्यम अपनाया और वह यह कि वे निर्बल और कमज़ोर मुसलमानों पर अत्याचार करने लगे। उन मुसलमानों को ये लोग ऐसा दुख देते थे कि जिस को सहन करने की शक्ति मानव से संभव नहीं है। उन्हें इतना पीड़ित करते कि जिस से रौंगटे खड़े हो जाते और हृदय काँप जाते हैं। उन उदाहरणों में एक हज़रत बिलाल हब्शी रज़ि अल्लाहु अन्हु हैं, जो उमय्या बिन ख़ल्फ़ के गुलाम एवं सर्वप्रथम इस्लाम स्वीकार करने वालों में से थे। जब उनके मालिक को उनके इस्लाम लाने के बारे में जानकारी मिली तो उन को अत्यन्त कठोर दण्ड दिया। उनकी गर्दन में रस्सी बाँध देते और बच्चों के सुपुर्द कर देते जो उन से खेलते थे। फिर भी बिलाल अहद, अहद ही कहते। उन को दोपहर के समय गर्म पत्थर के ऊपर

पीठ के बल लिटा देते फिर उन के सीने के ऊपर दूसरा बड़ा पत्थर रख देते और कहते कि तुम्हारे साथ यही व्यवहार होता रहेगा यहाँ तक कि तुम मुहम्मद का इन्कार करो या फिर तुम मर जाओ। फिर भी वह यही कहते अहद, अहद........

उन के मालिक उन को इसी कठोरता से पीड़ित करते रहे कि एक दिन उस मार्ग से हज़रत अबू बक्र रज़ि अल्लाहु अन्हु गुज़रे, आप ने उनको ख़रीद लिया और उनको मुक्त कर दिया।

हबशा की ओर हिजरत:

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों के साथ हो रहे, दुर्वयवहार को देखा तो आप ने उन्हें हब्शा की ओर पलायन (हिजरत) कर जाने का संकेत दिया और फ़रमाया कि वहाँ एक ऐसा राजा है जिन के पास किसी पर अत्याचार नहीं होता। तब कुछ मुसलमानों ने वहाँ हिजरत किया। ये लोग बारह पुरूष और चार महिलायें थे जिन में हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि अल्लाहु अन्हु और उनकी पत्नी हज़रत रूकय्या बिन्त रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी थीं। हब्शा की ओर यह सर्वप्रथम हिजरत थी जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी बनाए जाने के पाँचवें वर्ष हुई। ये मुसलमान वहीं रहे। जब उन्हें जानकारी मिली कि कुरैश के काफ़िर लोग भी इस्लाम ले आए हैं तो वे लोग लौट आए। फिर वे लोग मक्का के निकट आए तो उन को पता चला कि उन्होंने कुरैश के इस्लाम लाने से संबन्धित जो समाचार सुना था वह सत्य नहीं था बल्कि वह एक प्रोपैगन्डा था। अतः उन में से कुछ लोग पुनः हब्शा लौट गए और कुछ गुप्त रूप से अथवा किसी के शरण में चले गए।

कुरैश के लोग इस कारण अति आक्रोश में थे कि मुसलमानों को हब्शा में शान्त शरण मिल गया है फिर क्या था उनका अत्याचार और अत्याधिक बढ़ गया। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पुनः हिजरत का संकेत दिया तो जो लोग लौट के चले आए थे वे पुनः लौट गए। उनके संग बहुत से और भी लोगों ने हिजरत किया इन हिजरत करने वालों में तिरासी (८३) पुरूष एवं अठारह (१८) महिलायें थीं।

इसरा और मेराजः

बेसत का दसवाँ वर्ष (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी बने दस वर्ष बाद) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए अत्यन्त कठिन वर्ष था। इसी वर्ष आप के चचा अबू तालिब का देहांत हो गया जो आप को काफ़िरों के कष्ट से आप का बचाव करते थे। इसी वर्ष आप की पत्नी हज़रत खदीजा रज़ि अल्लाहु अन्हा की मृत्यु हो गई, जो आप को बहुत ढारस बंधाती थी और काफ़िरों की ओर से दी जाने वाली कष्टों को हल्का करती थीं। इसी वर्ष अपने चचा की मृत्यु के पश्चात आप ताएफ़ भी गए जहाँ आप ने सकीफ़ के लोगों से सहायता मांगी और ताएफ़ वालों के प्रति आशा जताई के वे इस्लाम ले आयें। परन्तु ताएफ़ वालों ने आप को नकार दिया और उनके मूर्खों, बच्चों एवं गुलामों ने आप का अपमान किया, आप को बुरा भला कहा और गालियां दी, आप को पत्थरों से इतना मारा कि आप के पवित्र शरीर से इत्ना ख़ून बहा कि आप के पाँव तक पहुंच गया और आप के मोज़े ख़ून से भर गए।

इसी वर्ष जहाँ आप पर इतनी विपदायें और आपदायें आयीं, उस इसरा एवं मेराज का चमत्कार हुआ, जिस के द्वारा अल्लाह ने यह चाहा कि

उस के नबी पर जो कठिन मुसीबतें आई हैं वे उन को बिल्कुल भूल जायें।

मेराज ही में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप की उम्मत पर नमाज़ अनिवार्य हुयी। इसरा का अर्थ चलना और मेराज का चढ़ना है। चमत्कार से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक्का से फ़िलस्तीन और वहाँ से सातों आकाश की सैर आदि रातों रात करना, यही इसरा और मेराज से अभिप्राय है।

हिजरत (पलायन):

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज के मौसम को मूल्यवान समझते हुए (जब कि लोग मक्का में चारों ओर से एकतित्र होते थे) लोगों को इस्लाम की ओर दावत देते। आप के नबी बनाए जाने के ग्यारहवें वर्ष में हज के मौसम के अवसर पर मदीना से कुछ लोग आए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें इस्लाम की दावत दी जिन में कुछ लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। फिर उस के बाद दूसरे हज के अवसर पर -सन बारह नबूवत- में बारह आदमी आये और अकबा के पास अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह दृढ़ प्रतिज्ञा (बैअत) ली कि वे लोग अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं बनायेंगे, वे लोग चोरी नहीं करेंगे, वे लोग ज़िना नहीं करेंगे और न ही वे लोग अच्छे कामों में नाफ़रमानी करेंगे।

जब ये बैअत करने वाले मदीना चले तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन के संग हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि अल्लाहु अन्हु को भेज दिया ताकि वह लोगों को दीन धर्म की बातें सिखायें और (अन्य को) इस्लाम की ओर बुलायें। अल्लाह ने हज़रत मुसअब

रज़ि अल्लाहु अन्हु की विशेष सहायता की और उनके हाथों पर मदीना के दो सरदारों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया, जिन का नाम उसैद बिन हुज़ैर और साद बिन मआज़ था। इन के इस्लाम लाने से मदीना वालों में से बड़ी संख्या में लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।

सन १३ नबूवत में बहुत से मुसलमान हज के लिये आए। उन लोगों ने यह निश्चय किया कि वे लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस प्रकार नि:सहाय एवं भयभीत नहीं छोड़ सकते। वे लोग गुप्त रूप से इकट्ठा हुए और उन्होंने यह बैअत (दृढ़ निश्चय और प्रतिज्ञा) लिया। इस बैअत को दूसरा अकबा भी कहा जाता है। उन की विशेष बातें यह थीं कि यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास (मदीना) हिजरत करेंगे तो वे लोग जैसे अपनी बीवी और बाल-बच्चों की रक्षा करते हैं उसी प्रकार से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा करेंगे। इस से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एवं मुसलमानों के लिए शान्ति शरण मिलने की आशा जगी और इस्लाम को ऐसा ठीकाना मिलता है जिस में वह शक्तिशाली होता है और वहाँ से अधिक प्रसारित होता है। इस बैअत में मुसलमानों के लिए संकेत था कि मुसलमान मक्का से मदीना की ओर हिजरत करें।

मुसलमानों की हिजरतः

दूसरे अकबा के पश्चात रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को हिजरत की अनुमति दे दी। लोग हिजरत (मदीना की ओर पलायन) करने लगे। केवल अब वही लोग (मक्का में) बाक़ी रह गए थे जिनको रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ठहरने की

अनुमति दी थी या वे लोग थे जो निर्बल थे और हिजरत करने की ताक़त उन में नहीं थी।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत मदीना की ओरः

जब अल्लाह तआला ने आप को वह्यि के द्वारा हिजरत की इजाज़त दे दी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बक्र रज़ि अल्लाहु अन्हु के घर दोपहर में गए और उन को सारी सूचना दी, फिर आप दोनों सफ़र करने और यात्रा की तैयारी पर सहमत हुए। एक आदमी को मज़दूरी पर रखा जो आप दोनों को रास्ता दिखाए। जब अंधेरा छा गया तो दोनो अबू बक्र के घर से निकले और सौर पहाड़ की गुफ़ा की ओर चले। वहाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथी के संग तीन रात तब तक रहे जब आप को पूर्ण विश्वास हो गया कि अब आप दोनों का पीछा कोई नहीं करेगा।

चौथे दिन आप की सवारी मदीना की ओर चली। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना के निकट कुबा नामक स्थान पर बारह रबीउल अव्वल पहली हिजरी (६२२ ईस्वी) को पहुँचे। यहीं आप ने मस्जिद कुबा बनवाई, जो इस्लाम में पहली मस्जिद बनी। फिर कुबा में कुछ दिन बिताने के पश्चात आप मदीना चले जहाँ आप का भव्य स्वागत हुआ। और जहाँ आज मस्जिद नबवी है वहाँ जब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊँटनी पहुँची तो वहीं पर बैठ गई और आप ऊँटनी से उतर गए। फिर हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि अल्लाहु अन्हु आए और आप को अपने घर ले गए और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके संग उनके घर में रहे।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना में:

सर्वप्रथम कार्य यहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिद नबवी बनवाने का किया, जहाँ पर आप की ऊँटनी बैठी थी। यह ज़मीन दो अनाथ बालकों की थी, आप ने उन से यह ख़रीद ली और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे बनाने में शामिल हुए। आप अपने साथियों के साथ पत्थर ढोते थे।

दूसरा कार्य यह किया कि आप ने अंसार (मदीनावासी) और मुहाजिर (मदीना से हिजरत करके आए मुसलमान) के मध्य भाई -भाई का संबन्ध स्थापित कर दिया। अब अंसार मुहाजिरों को अपने यहाँ लाने और मेहमान बनाने में एक-दूसरे से प्रतियोगिता करने लगे। फिर हर अंसारी और उनके यहाँ जो मुहाजिर थे उनके बीच प्रेमाधार भाई-भाई का संबन्ध बना दिया और ये कि वे मृत्यु के बाद एक-दूसरे के उत्तराधिकारी बनेंगे। आगे चलकर यह नियम तो समाप्त हो गया परन्तु भाई-भाई का संबन्ध बाक़ी रहा।

बद्र की लड़ाई:

मुसलमानों और काफ़िरों के मध्य यह पहली लड़ाई थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब अबू सुफ़ियान बिन हर्ब के नेतृत्व में जा रहे एक काफ़िला के बारे में जानकारी मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ साथियों ने उन का पीछा करने की इच्छा जतायी। कुछ लोग तो गए और कुछ पीछे रह गए क्योंकि उन्हें यह ज्ञान नहीं हो सका कि अन्ततः रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सामना युद्ध से हो जायेगा। इधर अबू सुफ़ियान को मुसलमानों के इरादे की जानकारी मिली तो उस ने एक आदमी को

मक्का भेज दिया ताकि वह कुरैश को सूचना दे एवं वे लोग काफ़िला को बचाने के लिये आयें। फिर क्या था काफ़िरों ने एक बड़ी सेना तैयार की जिसकी तादाद एक हज़ार थी, जिन में उन के सरदार एवं बड़े-बड़े लोग भी थे।

इधर अबू सुफ़ियान काफ़िला को बचाने में सफल रहे अतः कुरैश को यह सूचना (ख़बर) दी कि काफ़िला बच गया है इसलिए आप लोग मक्का लौट जायें। परन्तु अबू जहल ने बद्र की ओर चलने पर ज़ोर दिया।

मुसलमानों की सेना -जिनकी संख्या तीन सौ तेरह थी- बद्र के पानी के पास उतरी। वह १७ रमज़ान सन् २ हिजरी जुमआ का दिन था। दोनों सेना आमने-सामने हुयीं, लड़ाई शुरू हुयी। पहले मुसलमानों के तीन बहादुरों ने काफ़िरों के तीन लोगों को क़त्ल कर दिया। फिर सेनायें आपस में भिड़ पड़ीं, मुसलमानों ने ऐसी सेना से पूरे साहस से युद्ध किया जो उन से तीन गुना अधिक थी। अन्ततः मुश्रिकों की बहुत बुरी हार हुयी। उनके सत्तर लोग -जिन में अबू जहल भी था- सभी मारे गये, सत्तर लोग बंदी बनाये गये। उधर मुसलमानों के चौदह आदमी लड़ते हुए शहीद हुये। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुश्रिकों की लाशों को कुलैब कुयें में, जिस में पानी नहीं था फेंकवा दिया।

उहुद की लड़ाई:

बद्र की पराजय कुरैश के लिए अत्यन्त कष्टदायक थी अतः उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा की ख़ातिर बदला लेने की ठानी और युद्ध की आग

को भड़काया और तीन हज़ार योद्धाओं की एक सेना तैयार की। इधर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुरैश की तैयारी के सम्बन्ध में जानकारी मिली तो आप ने भी तीन समूह में सेना तैयार की और अपनी सेना के संग उहुद पहाड़ -जो मदीना से उत्तर दिशा और मस्जिद नबवी से साढ़े पाँच कि.मी. की दूरी पर है- की ओर चले। वहाँ आप ने युद्ध के लिए सेना को तैयार किया, काफ़िरों और मुसलमानों के मध्य लड़ाई शुरू हो गयी, परन्तु कुछ धनुष और तीर चलाने वालों की भूल के कारण मुसलमानों को क्षति का सामना करना पड़ा। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने लश्कर के संग उस पर्वत की घाटी में एकत्रित होने में सफल हुए और इसी कारण से मुसलमान उस घेरे से निकल सके। अब काफ़िरों को इन से युद्ध करने का साहस नहीं था।

इस लड़ाई में मुसलमानों के सत्तर आदमी शहीद हुए। उन्हीं में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु भी थे, जब कि मुश्रिकों के बाईस (२२) आदमी मारे गये।

गज़वये (युद्ध) बनी नज़ीरः

बनू नज़ीर के यहूदियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या का षडयंत्र किया तो आप ने उन लोगों को मदीना से निकलने का आदेश दिया परन्तु उन्होंने इंकार किया, उस पर मुसलमानों ने उन को घेर लिया, उन लोगों ने हथियार डाल दिये। अन्ततः वे मदीना से निकाल दिए गये।

गज़वये अहज़ाब (ख़न्दक़):

जिन यहूदियों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भगा दिया था,

उन लोगों ने कुरैश को मदीना पर चढ़ाई करने के लिए उकसाया तो कुरैश ने इस युद्ध के लिए बहुत बड़ी सेना तैयार की। उधर मुसलमानों ने अपनी सुरक्षा हेतु मदीना के चारों ओर गड्ढे खोद दिए। मुश्रिक अब मदीना पर हमला करना चाहते थे परन्तु वे अन्दर प्रवेश नहीं कर सकते थे। अल्लाह ने अत्यन्त ज़ोर की आँधी और हवा को भेजा फिर वे लोग असफल लौट गये।

गज़वये बनू कुरैज़ाः

ग़ज़वये ख़न्दक़ से आप अभी लौटे ही थे कि आप के पास हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और आप को बनू कुरैज़ा के यहूदियों की ओर जाने के लिए (अल्लाह का) आदेश दिया। आप वहाँ गए और उनका घेराव किया, वे लोग हार मान गए। उनके पुरूषों को मार डालने एवं महिलाओं और बच्चों को क़ैद करने और उन की सम्पत्तियों को वितरण करने का आदेश हुआ और इस प्रकार यह मामला समाप्त हुआ।

फ़त्ह (विजयी) मक्काः

सन् आठ हिजरी में अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का फ़त्ह करा दिया यह सब से बड़ी फ़त्ह थी। इसके माध्यम से अल्लाह ने अपने दीन एवं अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्मान दिया और अपने घर एवं आदरणीय नगर को बचा लिया और लोग अल्लाह के धर्म (दीन इस्लाम) में समूह के समूह प्रवेश करने लगे।

गज़वये हुनैनः

मक्का की फ़त्ह के बाद हवाजिन एवं सकीफ़ क़बीले के सरदारों को यह डर हुआ कि कहीं रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उन से भी

युद्ध न करें अतः उन लोगों ने मुसलमानों से युद्ध करने की ठानी और ये लोग हुनैन में एकत्रित हुए। उधर मुसलमानों ने भी तैयारी की। दोनों सेनायें आमने-सामने हुईं। शुरू में तो मुसलमानों को क्षति का सामना करना पड़ा, परन्तु अन्ततः इस में भी मुसलमानों को जीत मिली।

ग़ज़वये तबूक:

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह जानकारी मिली कि रूमियों ने आप से युद्ध के लिए बहुत बड़ी सेना तैयार की है अतः आप भी बड़ी सेना लेकर उनकी ओर निकले, आप की सेना तबूक तक पहुंच गई परन्तु वहाँ किसी को नहीं पाया। क्योंकि रूमियों को मुस्लिम सेना से युद्ध करने से भय पैदा हो गया।

हज्जतुल विदा (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अंतिम हज)

हज्जतुल विदा दस हिजरी को हुआ। इस का नाम यह इसलिए रखा गया कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहाँ अपने ख़ुत्बा (प्रवचन) में लोगों से फ़रमाया कि शायद अब इस वर्ष के बाद मैं तुम लोगों में से न मिल सकूँगा। क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मृत्यु की निकटता का आभास होने लगा था। और वास्तव में आप इस हज के बाद कुछ ही मास जीवित रहे कि आप की मृत्यु हो गयी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज करने की नीयत की जिसकी जानकारी लोगों को हुई तो जिसकी इच्छा हुई वह आप के संग गए। ज़ीकादा मास के अन्त में आप ने मदीना को छोड़ा और

वहाँ अपना प्रतिनिधि अबु दुजाना को बना दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संग हज़ारों मुसलमान तलबिया करते एवं अल्लाह की आज्ञा का आज्ञा पालन करने के लिए निकले। इस हज को हज्जतुल बयान भी कहते हैं क्योंकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहाँ ऐसा ख़ुत्बा दिया जिस में इस्लामी शरीअत (धर्म) के बहुत सारे नियम और आदेशों के सम्बंध में बहुत सी बातें खोलकर बताया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु:

रबीउल अव्वल मास के आरम्भ में आप को दर्द हुआ फिर बुख़ार लगा और रोग बढ़ता गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र को आदेश दिया कि वे लोगों को नमाज़ पढ़ायें। इस प्रकार अमानत के अदा करने, अल्लाह के संदेश को पहुंचाने एवं दुनिया की तस्वीर बदलने के बाद बारह रबीउल अव्वल सन् ग्यारह हिजरी को आप की मृत्यु हो गई।

जब लोगों ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के बारे में सुना तो उन के होश उड़ गए और सब आश्चर्य में डूब गए। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु तो खड़े होकर क़सम खाने लगे कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु नहीं हुई है। परन्तु जब हज़रत अबू बक्र रज़ि अल्लाहु अन्हु आए और कहा कि जो मुहम्मद की इबादत करता था तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु हो गई और जो अल्लाह की इबादत करता था तो अल्लाह जीवित है वह कभी नहीं मर सकता।

फिर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके कपड़ें उतारे बिना गुस्ल कराया गया और आप को कफ़न पहनाया गया और हज़रत आईशा रज़ि अल्लाहु अन्हा के घर में दफ़ना दिया गया। उस समय आप की आयु तिरसठ वर्ष की थी। आप ने अपने पीछे दुनिया की सम्पत्ति में से रूपया पैसा कुछ नहीं छोड़ा था।

◆ ◆ ◆

قصار السور والأدعية

छोटी सूरतें और दुआयें

सूरतुल फ़ातिहा–1

सूर: फ़ातिहा मक्का में उतरी इस में सात आयते हैं।

१. अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ۝١
२. सब तारीफ़ें अल्लाह सारे जहान के रब के लिये है	अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन	ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝٢
३. बड़ा मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है	अर्रहमानिर रहीम	ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ ۝٣
४. बदले के दिन (क़यामत) का मालिक है	मालिकि यौमिद्दीन	مَٰلِكِ يَوْمِ ٱلدِّينِ ۝٤
५. हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते और तुझ ही से मदद माँगते हैं	इय्याका नअ़बुदु व इय्याका नस्तईन	إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝٥
६. हमें सीधा (सत्य) रास्ता दिखा	इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम	ٱهْدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلْمُسْتَقِيمَ ۝٦
७. उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इंआम किया उन का नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न गुमराहों का।	सिरातल लज़ीन अन्अम्ता अ़लैहिम। ग़ैरिल मग़ज़ूबे अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन	صِرَٰطَ ٱلَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ ٱلْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا ٱلضَّآلِّينَ ۝٧

सूरतुल फ़ील–105

सूरतुल फ़ील मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
१. क्या तूने नहीं देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया।	अलम तरा कैफ़ा फ़अ़ल रब्बुका बेअसहा़बिल फ़ील	أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَٰبِ ٱلْفِيلِ ۝١
२. क्या उस ने उन की चाल को बेकार नहीं कर दिया?	अलम यजअ़ल कैदहुम फ़ी तज़लील	أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِى تَضْلِيلٍ ۝٢
३. और उन पर पक्षियों के झुरमुट भेज दिये।	व अरसला अ़लैहिम तैरन अबाबील	وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝٣
४. जो उन्हें मिट्टी और पत्थर की कंकरियाँ मार रहे थे।	तरमीहिम बेहिजारतिन मिन सिज्जील	تَرْمِيهِم بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ۝٤
५. तो उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया।	फ़जअ़लहुम कअसफ़िन माकूल	فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍۭ ۝٥

सूरतु कुरैश–106

सूरतु कुरैश मक्का में नाज़िल हुई और इस में चार आयते हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
१. कुरैश को प्रेम दिलाने के लिए।	लेईलाफ़े कुरैश	لِإِيلَٰفِ قُرَيْشٍ ۝١
२. (यानी) उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा (सफ़र) का आदी बनाने के लिए।	इलाफ़िहिम रेहलतिश शिताये वस्सैफ़	إِۦلَٰفِهِمْ رِحْلَةَ ٱلشِّتَآءِ وَٱلصَّيْفِ ۝٢
३. तो (उस शुक्रिये में) उन्हें चाहिए कि इसी घर के रब की इबादत करते रहें।	फ़लयअ़बुदू रब्बा हाज़ल बैत	فَلْيَعْبُدُوا۟ رَبَّ هَٰذَا ٱلْبَيْتِ ۝٣
४. जिस ने उन्हें भूख में खाना दिया और डर (और भय) में अमन अता किया।	अल्लज़ी अतअ़महुम मिन जूईन व आमनहुम मिन ख़ौफ़	ٱلَّذِىٓ أَطْعَمَهُم مِّن جُوعٍ وَءَامَنَهُم مِّنْ خَوْفٍۭ ۝٤

सूरतुल माऊन–107

सूरतुल माऊन मक्का में नाज़िल हुई इस में सात आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
१. क्या तूने (उसे भी) देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है।	अरऐतल लज़ी यूकज़्ज़िबु बिद्दीन	أَرَءَيْتَ ٱلَّذِى يُكَذِّبُ بِٱلدِّينِ ﴿١﴾
२. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्के देता है।	फ़ज़ालिकल लज़ी यदुअउल यतीम	فَذَٰلِكَ ٱلَّذِى يَدُعُّ ٱلْيَتِيمَ ﴿٢﴾
३. और ग़रीब (भूके) को खाना खिलाने की प्रेरणा (तरग़ीब) नहीं देता।	वला यहुज़्ज़ु अला तआमिल मिस्कीन	وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ ٱلْمِسْكِينِ ﴿٣﴾
४. उन नमाज़ियों के लिए 'वैल' (नरक की एक जगह) है।	फ़वयलुल–लिल्मुसल्लीन	فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ﴿٤﴾
५. जो अपनी नमाज़ से अचेत (ग़ाफ़िल) है।	अल्लज़ीन हुम अन सलातिहिम साहून	ٱلَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ﴿٥﴾
६. जो दिखावे का काम करते हैं।	अल्लज़ीन हुम यूराऊना	ٱلَّذِينَ هُمْ يُرَآءُونَ ﴿٦﴾
७. और प्रयोग में आने वाली चीज़ें रोकते हैं।	व यमनऊनल माऊन	وَيَمْنَعُونَ ٱلْمَاعُونَ ﴿٧﴾

सूरतुल कौसर–108

सूरतुल कौसर मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीन आयते हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
१. बेशक हम ने तुझे कौसर (और बहुत कुछ) दिया है।	इन्ना आतैनाकल–कौसर	إِنَّآ أَعْطَيْنَٰكَ ٱلْكَوْثَرَ ﴿١﴾
२. तो तू अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ और कुर्बानी कर।	फ़सल्लि लेरब्बिका वनहर	فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَٱنْحَرْ ﴿٢﴾
३. बेशक तेरा दुश्मन ही लावारिस और बेनाम व निशान है।	इन्न शानिअका हुवल अब्तर	إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ ٱلْأَبْتَرُ ﴿٣﴾

सूरतुल काफ़िरून–109

सूरतुल काफ़िरून मक्का में नाज़िल हुई और इस में छः आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
१. आप कह दीजिये कि हे काफ़िरो!	कुल या अय्योहल काफ़िरून	قُلْ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلْكَـٰفِرُونَ ۝١
२. न मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम पूजा करते हो।	ला आबुदू मा तअबुदून	لَآ أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝٢
३. और न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ।	वला अन्तुम आबेदूना मा आबुद	وَلَآ أَنتُمْ عَـٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ ۝٣
४. और न मैं इबादत करने वाला हूँ उसकी जिसकी तुमने इबादत की।	वला अना आबिदुन मा अबदतुम	وَلَآ أَنَا۠ عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ ۝٤
५. न तुम उसकी इबादत करोगे जिसकी इबादत मैं कर रहा हूँ।	वला अन्तुम आबिदूना मा आबुद	وَلَآ أَنتُمْ عَـٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ ۝٥
६. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म (दीन) है और मेरे लिये मेरा धर्म है।	लकुम दीनुकुम वलिया दीन	لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِىَ دِينِ ۝٦

सूरतुन नस्र–110

सूरतुन नस्र मदीने में नाज़िल हुई और इस में तीन आयते हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
१. जब अल्लाह की मदद और विजय (फ़त्ह) हासिल हो जाये।	इज़ा जाअ नसरुल्लाहि वल-फ़तह	إِذَا جَآءَ نَصْرُ ٱللَّهِ وَٱلْفَتْحُ ۝١
२. और तू लोगों को अल्लाह के धर्म की तरफ़ झुंड के झुंड आता देख ले।	व रऐयतन्नास यदख़ुलूना फ़ी दीनिल्लाहे अफ़वाजा	وَرَأَيْتَ ٱلنَّاسَ يَدْخُلُونَ فِى دِينِ ٱللَّهِ أَفْوَاجًا ۝٢
३. तो तू अपने रब की महिमा (तस्बीह) और तारीफ़ करने में लग, और उस से माफ़ी की दुआ कर, बेशक वह माफ़ करने वाला है।	फ़सब्बिह बिहम्दि रब्बिका वस्तग़फ़िरहु, इन्नहू कान तव्वाबा	فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَٱسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ تَوَّابًۢا ۝٣

सूरतु लहब–111

सूरतु लहब मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयते हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
१. अबू लहब के दोनों हाथ टूट गये और वह (ख़ुद) नाश हो गया।	तब्बत यदा अबी लहबिन वतब्ब	تَبَّتْ يَدَآ أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ١
२. न तो उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमायी।	मा अग़ना अ़न्हू मालुहू व मा कसब	مَآ أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُۥ وَمَا كَسَبَ ٢
३. वह मुस्तक़बिल क़रीब में भड़कने वाली आग में जायेगा।	सयसला नारन ज़ाता लहब	سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ٣
४. और उसकी पत्नी भी (जायेगी), जो लकड़ियाँ ढोने वाली है।	वम्राअतुहू हम्मालतल हतब	وَٱمْرَأَتُهُۥ حَمَّالَةَ ٱلْحَطَبِ ٤
५. उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुई रस्सी होगी।	फ़ी जीदिहा हबलुन मिन मसद	فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍۭ ٥

सूरतुल इख़्लास–112

सूरतुल इख़्लास मक्का में नाज़िल हुई और इस में चार आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
१. (आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह एक (ही) है।	कुल हुवल्लाहु अहद	قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ١
२. अल्लाह (तआ़ला) बेनियाज़ है।	अल्लाहुस्समद	ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ٢
३. न उस से कोई पैदा हुआ और न उसे किसी ने पैदा किया।	लम यलिद व लम यूलद	لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ٣
४. और न कोई उसका समकक्ष (हमसर) है।	व लम यकुन लहू कुफ़ूवन अहद	وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدٌۢ ٤

सूरतुल फ़लक़–113

सूरतुल फ़लक़ मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
१. आप कह दीजिये कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ।	कुल अऊज़ु बेरब्बिल फ़लक़	قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلْفَلَقِ ﴿١﴾
२. हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की है।	मिन शर्रे मा ख़लक़	مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿٢﴾
३. और अंधेरी रात की बुराई से, जब उसका अंधेरा फैल जाये।	व मिन शर्रे ग़ासेक़िन इज़ा वक़ब	وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ﴿٣﴾
४. और गाँठ (लगाकर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से (भी)	व मिन शर्रिन नफ़्फ़ासाति फ़िल उ़क़द	وَمِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِى ٱلْعُقَدِ ﴿٤﴾
५. और द्वेष (हसद) करने वाले की बुराई से भी जब वह द्वेष करे।	व मिन शर्रे हासिदिन इज़ा हसद	وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾

सूरतुन नास–114

सूरतुन नास मक्का में नाज़िल हुई और इस में छः आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
१. आप कह दीजिये कि मैं लोगों के रब की पनाह में आता हूँ।	कुल अऊज़ु बेरब्बिन-नास	قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ ٱلنَّاسِ ﴿١﴾
२. लोगों के मालिक की। (और)	मलिकिन-नास	مَلِكِ ٱلنَّاسِ ﴿٢﴾
३. लोगों के पूजने लायक की (पनाह में)	इलाहिन-नास	إِلَٰهِ ٱلنَّاسِ ﴿٣﴾
४. शंका (शक) डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से।	मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नास	مِن شَرِّ ٱلْوَسْوَاسِ ٱلْخَنَّاسِ ﴿٤﴾
५. जो लोगों के सीनों में शंका (वसवसा) डालता है।	अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन-नास	ٱلَّذِى يُوَسْوِسُ فِى صُدُورِ ٱلنَّاسِ ﴿٥﴾
६. (चाहे) वह जिन्न में से हो या इंसान में से।	मिनल जिन्नते वन्नास	مِنَ ٱلْجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ ﴿٦﴾

कुछ महत्वपूर्ण दुआयें

नींद से जागने के बाद की दुआ:

जब आप नींद से जागें तो तो यह पढ़ें:

«اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ»

"अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बाद मा अमातना व इलैहिन नुशूर"

"सभी प्रशंसा केवल उस अल्लाह के लिए है जिसने मृत्यु के बाद हमें जीवित किया और उसी के पास लौट के जाना है।"

- आप सुबह सवेरे जागें।
- पवित्रता प्राप्त करें एवं नमाज़ की तैयारी करें।
- मिस्वाक (दातुन) का प्रयोग करें।

शौचालय में प्रवेश करने की दुआ:

जब आप शौचालय जायें तो पढ़ें:

«اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ»

"अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ोबिक मिनल खुबूसि वल ख़बाएस"

"ऐ अल्लाह! मैं शैतान पुरूषों एवं महिलाओं से तेरी शरण चाहता हूँ।"

- (शौंचालय में प्रवेश करते समय पहले) बायें पैर रखें।
- प्रवेश करने से पहले दुआ पढ़ें।
- शौंचालय के दौरान बात-चीत न करें।
- क़िब्ला (पश्चिम) की ओर मुंह अथवा पीठ न करें।
- पेशाब करने के बाद तीन बार सफ़ाई करें।

शौंचालय से निकलने के बाद की दुआ:

जब आप शौंचालय से निकलें तो ये पढ़ें:

«غُفْرَانَكَ»

"गुफ़रानका"

"ऐ अल्लाह मैं तेरी क्षमा चाहता हूँ।"

«اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أذهب عني الأذى وَعَافَانِي»

"अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़हब अन्नी अल-अज़ा व आफ़ानी"

"सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने मुझ से गंदगी दूर की और मुझे आफ़ियत दी'' (शौंचालय से निकलते समय पहले) दायें पैर को निकालें, दुआ निकलने के बाद कहें।

मस्जिद में प्रवेश करते समय की दुआः

जब आप मस्जिद में प्रवेश करें तो कहें:

«بِسْمِ اللهِ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللهِ، اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ»

"बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि, अल्लाहुम्म इफ़्तह ली अबवाब रहमतिक''

"अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद और शान्ति हो, ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपनी दया के द्वारों को खोल दे।''

- (मस्जिद में प्रवेश करते समय पहले) दायां पैर रखें।
- तहीयतुल मस्जिद दो रकअत नमाज़ पढ़े।
- पूरी एकाग्रता के साथ नमाज़ की प्रतीक्षा करें।
- ज़िक्र (अल्लाह की याद) एवं कुरआन पढ़ने में व्यस्त रहें।

मस्जिद से निकलने के बाद की दुआः

जब आप मस्जिद से निकलें तो ये पढ़ें:

«بِسْمِ اللهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللهِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ»

"बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि, अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुक मिन फ़ज़लिक''

"अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ और दरूद और शान्ति हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर, ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरे दया का सवाल करता हूँ''

- (पहले) बायें पैर को बाहर करें।
- सभी बुराई के करने से दूर रहें।
- जब तक दूसरी नमाज़ के लिए आयें अपने दिल को मस्जिद से लटकाए रहें।

खाने की दुआः

खाने से पहले आप ये पढ़ें:

«بِسْمِ اللهِ»

"बिस्मिल्लाह''

"अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ''

और जब खाना खा लें तो ये पढ़ें:

«الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَطْعَمَنِي هَذَا، وَرَزَقَنِيهِ، مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلَا قُوَّةٍ»

"अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत-अमनी हाज़ा वरज़कनीहि मिन ग़ैरि हौलिम मिन्नी वला कूव्वत''

"सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे यह खिलाया और मुझ को यह रोज़ी दी बिना मेरी अपनी शक्ति के''

- आप खाने से पहले और बाद में अपने दोनों हाथ को धोयें।
- बराबर सुकून से बैठें।
- अपने दायें हाथ से खायें।
- जो आप के निकट हो उस से खायें।
- एक तिहाई खाने, एक तिहाई पीने और एक तिहाई साँस लेने को छोड़े।
- खाने की कभी बुराई न करे।

घर से निकलने के समय की दुआ:

जब आप घर से निकलें तो ये पढ़ें:

«بِسْمِ اللهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ»

"बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अलल-लाहि ला हौला वला कूव्वत इल्ला बिल्लाहि"

"अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, अल्लाह पर ही मैं भरोसा करता हूँ। पापों से रुकने और पुण्यों के करने की शक्ति मात्र अल्लाह की ही ओर से है"

- आप जिन से भी मिलें उन से सलाम करें।
- नज़र नीची रखें।
- मार्ग की हानिकारक वस्तुओं को हटा दें।

छींकने की दुआ:

ज्ब आप छींकें तो ये पढ़ें:

«اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ»

"अल्हम्दु लिल्लाहि"

"सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है"

और जब कोई आप से (यह कहने पर) कहे:

«يَرْحَمُكَ اللهُ»

"यरहमुकल्लाह"

"अल्लाह आप पर दया करे"

तो आप उत्तर में ये कहें:

«يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ»

"यहदीकुमुल्लाह व युसलिहु बालकुम"

"अल्लाह तुम को हिदायत दे और तुम्हारी स्थिति को सुधार दे"

लोगों का धन्यवाद:

जब कोई आप के साथ अच्छाई करे या कुशल व्यवहार करे तो आप कहें:

«جَزَاكَ اللهُ خَيْرًا»

"जज़ाकल्लाहु ख़ैरा"

"अल्लाह आप को इसका अच्छा बदला दे"

मरीज़ से मिलने जाने के समय की दुआ:

जब आप किसी मरीज़ (रोगी) से मिलें तो ये कहें:

«لَا بَأْسَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللهُ»

"ला बास तहुरुन इन्शाअल्लाहु"

"कोई बात नहीं है, यदि अल्लाह ने चाहा तो अच्छे हो जाओगे"

- मरीज़ के निकट अधिक समय तक न बैठें।
- ऐसी बातें करें जिस से मरीज़ को संतोष हो।
- आप उन से कहें (सात बार):

«أَسْأَلُ اللهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيكَ»

"अस अलुलाहल अज़ीम रब्बल अरश्लि अज़ीम अन यश्फ़ीका"

"मैं अल्लाह महान से जो अरशे अज़ीम का मालिक है, प्रार्थना करता हूँ कि तुम को भला चंगा कर दे।"

इस्लामी सलाम:

जब आप कहीं किसी के निकट से गुज़रें अथवा किसी से सामना हो तो ये कहें:

«السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ»

"अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातोहू"

"आप पर अल्लाह की शान्ति, दया और बरकत नाज़िल हो"

सोने के समय की दुआ:

आप सोने के समय ये पढ़ें:

«بِاسْمِكَ اللَّهُمَّ أَمُوتُ وَأَحْيَا»

"बिइसमिक अल्लाहुम्मा अमूतु व अहया"

"ऐ अल्लाह तेरे नाम से सोता हूँ और तेरे नाम से उठूँगा"

- आप सवेरे सोयें ताकि सुबह सवेरे जाग सकें।
- सोने से पहले वुज़ू कर लें।
- अपने दायें करवट सोयें।
- आयतल कुर्सी, सूरह इखलास सूरह अल-फ़लक़ और सूरह अन्नास पढ़ें।

सवारी पर सवार होने के समय की दुआ:

आप जब किसी चौपाया या गाड़ी पर सवार हों तो कहें:

«بِسْمِ اللهِ، الْحَمْدُ للهِ ﴿سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ○ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ﴾»

"बिस्मिल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह, सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुकरेनीन व इन्ना इला रब्बेना ल मुनकलिबून"

"अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, पवित्र है वह जिस ने हमारे लिए इस को हमारे अधीन किया हालांकि हम इसकी शक्ति नहीं रखते थे। और नि:संदेह हम सबको उसी के पास लौट कर जाना है"

वुजू के बाद की दुआ:

वुजू पूरा होने के बाद आप ये पढ़ें:

«أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ»

"अशहदु अन ला इलाह इल्लाहु वहदहु ला शरीक लहू व अशहदू अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू, अल्लाहुम्म-इजअलनी मिनत तौव्वाबी न वजअलनी मिनल मुततहहेरीन''

"मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह एक है उस का कोई साझी नहीं और गवाही देता हूँ कि निःसंदेह मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह! मुझे प्रायश्चित करने वालों और पवित्रता प्राप्त करने वालों में से बना।''

- अत्यधिक पानी का प्रयोग न करें।
- जब आप का वुजू टूट जाए तो पुनः वुजू करें।

◆ ◆ ◆

الآداب الاسلامية

इस्लामी आदाब

इस्लामी आदाब

सलाम फैलानाः

इस्लाम हर उस कार्य की ओर निमन्त्रण देता है जिस से सामान्य लोगों के बीच प्रेम और शान्ति फैले। इस के लिए सलाम की दावत दी। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

> "तुम लोग मोमिन हुए बिना स्वर्ग में नहीं जा सकते और तुम मोमिन तब तक पूरे नहीं हो सकते जब तक आपस में प्रेम न करने लगो, क्या तुम को ऐसी बात न बतला दूँ कि यदि तुम उसे करने लगो तो आपस में प्रेम करने लगोगे (देखो) आपस में सलाम फैलाओ।'' (मुस्लिम)

यह सलाम इस्लाम के सलाम करने के ढंग के अनुसार यह कहना है: "अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू'' और उस के उत्तर में कहना है: व अलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू'' और सलाम करना सुन्नत है जब कि उस का उत्तर देना अनिवार्य है। और सलाम करने के नियमों में से एक यह नियम है कि यदि कोई सवारी पर हो तो (सर्वप्रथम) वह पैदल चलने वाले से सलाम करे,

पैदल चलने वाला बैठे व्यक्ति से सलाम करे और थोड़े लोग अधिक लोगों से सलाम करने में पहल करें।

सच्चाई:

इस्लाम पवित्रता और सफ़ाई का धर्म है जो हर अच्छी बात की ओर बुलाता एवं बुरी बात से रोकता है। इसी कारण से वह सच्चाई की ओर बुलाता और झूठ से रोकता है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَكُونُوا۟ مَعَ ٱلصَّٰدِقِينَ﴾

"ऐ मोमिनो अल्लाह से डरो और सच बोलने वालों में से बनो।" (अत्तौबा:११९)

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़र में झूठ सब से ज़्यादा एवं परले दर्जे के चरित्रों में से एक था। हज़रत आईशा रज़ि अल्लाहु अन्हा बताती हैं कि "रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़र में झूठ से ख़राब और कोई चीज़ नहीं थी।" (इब्ने हिब्बान)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"मुनाफ़िक़ की तीन पहचान है, जब बोले तो झूठ बोले, जब वादा करे तो उस को तोड़े और जब उसके पास अमानत रखी जाए तो वह ख़यानत करे।" (बुख़ारी, अल-फ़त्ह १/३३)

अत: मुसलमान का कर्तव्य है कि वह सच्चाई को अपनाए क्योंकि यही स्वर्ग में जाने का माध्यम है और झूठ से बचे कि यह नर्क में ले जाने वाला है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"सच्चाई भलाई का मार्ग दिखाती है और भलाई स्वर्ग की ओर ले जाती है। और नि:संदेह आदमी जब सच बोलता रहता है तो अल्लाह के यहाँ बहुत सच बोलने से (सिद्दीक़) लिख दिया जाता है, और नि:संदेह झूठ दुष्टता की ओर मार्गदर्शन कराती है और दुष्टता नर्क की ओर ले जाती है। नि:संदेह जब मुनष्य झूठ बोलता रहता है तो वह अल्लाह के यहाँ झूठ बोलने वाला लिखा जाता है।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

रिश्ते–नाते जोड़ना:

इस्लाम ने रिश्ते-नाते जोड़ने का संदेश दिया और उसे तोड़ने से कड़ाई से रोका और बताया कि नि:संदेह रिश्ते-नाते तोड़ने वाला स्वर्ग में नहीं जाएगा।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"रिश्ते-नाते तोड़ने वाला जन्नत में नहीं प्रवेश करेगा।" (बुख़ारी:५९८४)

रिश्ते-नाते जोड़ने से जीविका में बढ़ोत्तरी होती और उम्र लम्बी होती है, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक हदीस में है, आप ने फ़रमाया:

"जिस को यह बात अच्छी लगे कि उसकी जीविका में फैलाव हो और उम्र लम्बी हो तो उसे चाहिए कि वह रिश्ते-नाते जोड़े।" (बुख़ारी:५९८५)

रिश्ते-नाते जोड़ने से रिश्तेदारों के बीच प्रेम, एकता और अमन-चैन में बढ़ोतरी होती है।

माता–पिता के साथ अच्छा व्यवहार:

इस्लाम ने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने की वसीयत की और उन की नाफ़रमानी (अवज्ञा) से कड़ाई से रोका है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿وَوَصَّيْنَا ٱلْإِنسَٰنَ بِوَٰلِدَيْهِ حُسْنًا﴾

"और हम ने मानव को उन के अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने की वसीयत की।" (अन्कबूत-८)

अच्छे व्यवहार का अर्थ है कि उनके साथ भलाई करे, विनम्रता बरते, शिष्टाचार से पेश आए, उन की देख-रेख करे और किसी भी प्रकार का कोई ख़राब व्यवहार न करे। इसीलिए माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना महान पुण्यों में से है। इसी कारण से अल्लाह ने अपनी इबादत के साथ उसको मिलाते हुए फ़रमाया:

﴿وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوٓا۟ إِلَّآ إِيَّاهُ وَبِٱلْوَٰلِدَيْنِ إِحْسَٰنًا﴾

"और तेरे रब का निर्णय हुआ कि तुम उस (अल्लाह) के अतिरिक्त किसी की इबादत मत करो और अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो।" (इस्रा:२३)

साथ ही उनके साथ क्रोध अभिवयक्त करने में उफ़्फ़ जैसे छोटे से छोटे ख़राब व्यवहार से कड़ाई से मनाही की एवं उनके साथ अनुशासन से सम्बोधन करने का आदेश दिया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿فَلَا تَقُل لَّهُمَآ أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا﴾

"और उन दोनों को उफ़्फ़ तक मत कहो और न ही उन को झिड़को।" (इस्रा:२३)

माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार बहुत महान पुण्यों (सवाब) में से है बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे जिहाद से भी ऊँचा स्थान दिया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद रज़ि अल्लाहु अन्हु का बयान है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया कि "अल्लाह को सब से अधिक प्रिय कौन सा कार्य है? आप ने फ़रमाया:

"समय पर नमाज़ पढ़ना" पूछा फिर कौन? फ़रमाया: "माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना" पूछा फिर कौन? फ़रमाया: "अल्लाह की राह में जिहाद करना।" (बुख़ारी:५९७०)

एक पुरूष नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जिहाद में अनुमति मांगने के लिए आया आप ने प्रश्न किया कि "क्या तेरे माता-पिता जीवित हैं? उस ने उत्तर दिया, "हाँ" आप ने फ़रमाया: उन्हीं दोनों (की सेवा) में जिहाद करो।"

माता-पिता की अवज्ञा करना बहुत बड़े पापों में से है। अब्दुर्रहमान बिन अबी बकरह अपने पिता के हवाले से बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"क्या मैं तुम लोगों को बहुत बड़े पाप के बारे में न बताऊँ? आप ने यह प्रश्न तीन बार किया। हम लोगों ने उत्तर दिया जी हाँ ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! फिर आप ने फ़रमाया: अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाना और माता-पिता की अवज्ञा करना।" (बुख़ारी:५९७६)

माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना महान स्रोत एवं ऐसा दरवाज़ा है जिस से होकर मुसलमान स्वर्ग में प्रवेश करेगा। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"पिता जन्नत के द्वारों में मध्य द्वार है यदि चाहो तो तुम उस द्वार को नष्ट कर दो अथवा उसकी रक्षा करो।" (तिर्मिज़ी:१९००)

जुबान की रक्षा:

इस्लाम गुणों का, पाकदामनी का एवं पवित्रता का धर्म है। इसी कारण से वह हमेशा अच्छी करनी एवं कथनी की ओर बुलाता है। इस्लाम ने इस ओर बहुत गंभीरता से ध्यान दिया कि एक मुसलमान की बोली कैसी हो। अत: उस ने आदेश दिया कि एक मुसलमान की हर बोली और बात अच्छी हो और वह जब भी बोले तो अच्छी बात बोले। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

﴿وَقُل لِّعِبَادِى يَقُولُوا۟ ٱلَّتِى هِىَ أَحْسَنُ﴾

"ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम!) मेरे बंदों से कह दीजिये कि बात वही करें जो अच्छी हो।" (इस्रा:५३)

मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि उसकी बात अच्छी एवं अनुशासित हो, वह दूसरों को ख़ास कर अपने मुसलमान भाई को कष्ट देने से बचे। (बोले तो अच्छी बात बोले) अन्यथा उसके लिए अच्छा यही है कि वह चुप रहे। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

﴿لَّا خَيْرَ فِى كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَىٰهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَٰحٍۭ بَيْنَ ٱلنَّاسِ﴾

"लोगों की प्राय: बातों में कोई अच्छाई नहीं होती, हाँ (वह बात जिस में) वह दान करने को कहे अथवा पुण्य के लिए कहे अथवा लोगों के बीच सुधार की बात करे....." (निसा:११४)

और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि वह बोले तो भली बात बोले नहीं तो चुप रहे।" (हदीस)

पड़ोसी का अधिकार (हक़):

इस्लाम लोगों के बीच अच्छे से अच्छे संबन्ध और मामला स्थापित करने की प्रेरणा देता है। नि:संदेह पड़ोसी सभी लोगों में इसके लिए सब से योग्य हैं। इसी कारण से क़ुरआन एवं हदीस में इनके संबन्ध में अत्यधिक वसीयत आई है।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"जिब्रील अलैहिस्साम पड़ोसियों के संबन्ध में इतनी अधिक वसीयत करते थे कि मुझे ऐसा लगा कि कहीं उनको उत्तराधिकारी भी न बना दिया जाए।"

मुसलमान का अपने मुसलमान भाई के साथ व्यवहार:

इस्लाम मुसलमानों के दिलों में निकटता पैदा करता है इसीलिए उन में अल्लाह के लिए भाईचारगी बना दिया है ताकि वे एक-दूसरे से प्रेम करें और एक अपने ऊपर दूसरे भाई को वरीयता दे। एक को जिस बात से दुख या खुशी पहुंचे दूसरे को भी पहुंचे। जब मुहताज हो तो उसे दे, जब सहायता मांगे तो सहायता करे, जब फ़रियाद करे तो

उसे सुने, उस के साथ ख़यानत न करे, उसे ज़लील न करे, उसे गिरी नज़रों से न देखे, मुसीबत दूर कर दे और उसकी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रयास करे।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

मुसलमान, मुसलमान का भाई है, न उस पर अत्याचार करता है न उसको बेयार व मददगार छोड़ देता है, जो अपने भाई की आवश्यकता की पूर्ति में लगा रहता है अल्लाह उसकी ज़रूरत पूरी करता है, और जो व्यक्ति किसी मुसलमान से दुख दूर करेगा, अल्लाह क़यामत के दिन उसका दुख दूर करेगा और जो किसी मुसलमान की पर्दापोशी करेगा, क़यामत के दिन अल्लाह उसकी पर्दापोशी करेगा। (हदीस)

मुसलमान का ग़ैर मुस्लिम के साथ मामला:

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"दीन मामला का ही नाम है।"

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी एक के साथ अच्छे व्यवहार, लेन-देन या मामले को सीमित नहीं किया बल्कि सामान्य बात कही ताकि उस में सभी अरबी, अजमी, निकट और दूर, मुस्लिम और काफ़िर शामिल हो जायें। बल्कि इस्लाम ने अच्छा मामला और विनम्र व्यवहार करने के लिए सभी के साथ यहाँ तक कि जानवरों के साथ भी अच्छा व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित किया है। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"एक महिला को एक बिल्ली के कारण कठोर दण्ड दिया गया, जिस को उसने मृत्यु तक क़ैद में रखा, था, इस कारण से जहन्नम

में गई न उसको खाने-पीने के लिए दिया और न ही उसे छोड़ा कि ज़मीन के घास-पूस ही खा ले।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

सब्र (संयम):

इस्लाम में सब्र की महान विशेषता है। अल्लाह के यहाँ संयम (सब्र) का क्या ऊँचा स्थान है उस का अनुमान इस से भी होता है कि इसका ज़िक्र क़ुरआन में सत्तर से अधिक स्थानों पर किया है। अत: मुसलमान से सब्र और संयम मतलूब है और यह कि वह कष्ट को सहन करे इस आशा में कि अल्लाह के यहाँ उसका बड़ा पुण्य है। सब्र सच्चे मोमिन की विशेषताओं में से है क्योंकि अल्लाह ने उसे जो आदेश दिया है उस के पालन करने में उसे और जिस से रोका है उस से रुकने में इस की अति आवश्यकता है। अल्लाह को यह बात पसन्द है कि एक मोमिन को जब कोई मुसीबत अपने प्रति अथवा धन और संतान के प्रति पहुंचे तो वह सब्र और संयम से सुसज्जित हो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के लिखे पर नाराज़ न हो वर्ना अल्लाह का क्रोध उस पर उतरेगा।

ऐ मेरे नए मुस्लिम भाई! आप को सभी लोगों से अधिक संयम और सब्र की आवश्यकता है। क्योंकि बहुत से नए मुसलमानों को बड़ी कठिनाईयों का सामना होता है और अपने लोगों की ओर से अथवा अपने समाज और दल की ओर से सत्य धर्म से फेरने के प्रयास में, बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अत: आप पर सब्र और संयम अनिवार्य है। अल्लाह तआला आप से चाहता है कि आप उस से सब्र के माध्यम से सहायता माँगे। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿وَٱسْتَعِينُوا بِٱلصَّبْرِ وَٱلصَّلَوٰةِ﴾

"और तुम सब्र एवं नमाज़ के माध्यम से सहायता मांगो।" (बकरा:४५)

इस्लाम समानता का धर्मः

इस्लाम अपने सभी अनुयायियों के बीच समानता का धर्म है। अरबी को अजमी या अजमी को अरबी पर, तक़वा (अल्लाह का डर) के अलावा किसी भी बात पर विशिष्टता प्राप्त नहीं है। इस्लाम में समानता का मंज़र सभी इबादतों एवं जीवन के सभी कोनो में दिखाई देती है। नमाज़ में सभी मुसलमान एक साथ खड़े होते हैं। मालिक और नौकर, धनवान और ग़रीब, गोरा और काला, सभी एक ही क़तार में कन्धे से कन्धा मिला कर खड़े होते हैं और एक ही छत के नीचे खड़े होते हैं ताकि वे सब एक साथ अल्लाह तआला के लिए रुकू और सज्दा करें। इसी प्रकार सभी मुसलमान रोज़े की हालत में एक साथ खाने-पीने और पत्नी से मिलने से रुकते हैं, जिस प्रकार एक साथ एक ही समय में रोज़ा खोलते हैं। हज में भी सभी हाजी हज के मनासिक को एक-दूसरे ही की तरह अदा करते हैं, यदि हम हाजियों की ओर देखें तो हम उनको एक-दूसरे से अलग नहीं कर सकते कि कौन किस स्थान, किस देश अथवा किस रंग का है। कुरआन हमें सदैव न्याय और समानता का आदेश देता है और अत्याचारियों को धमकी देता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ﴾

"नाप-तौल में कमी करने वाले के लिए जहन्नम है।" (मुतफ़्फ़िफ़ीन:१)

इसी प्रकार अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلْمُقْسِطِينَ﴾

"नि:संदेह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है।" (हुजुरात:९)

क्या आज कोई व्यवस्था है जो इस्लाम के समान न्याय और समानता पर इतना बल देता हो? और क्या वह लोकतंत्र व्यवस्था भी, जिस के सम्बन्ध में कुछ लोग कहते हैं कि वह उस व्यवस्था से भी श्रेष्ठ है जो मानव को पैदा करने वाले और उसके मालिक ने उसके लिए उतारा है। ऐ बुद्धिमानों नसीहत हासिल करो।

इस्लाम और आतंकवादः

हमारे वर्तमान युग में इस्लाम को आतंकवाद से जोड़ने की एक सोच बन गई है। जबकि इस सोंच की उत्पत्ति इस्लाम के दुश्मनों और उनके द्वारा हुई जिन्होंने इस्लाम को समझा ही नहीं है और उनके द्वारा भी जिन्होंने इस्लाम के अर्थ को कुछ लोगों के हेर-फेर के माध्य से समझा है। और जो इस पर विश्वास करता है मानो उस ने धर्म और मानव के सम्बन्ध को नहीं समझा है। वह भूल जाता है कि धर्म और चीज़ है और मानव और चीज़ है।

अत: इस्लाम का एक बुलन्द दीन के रूप में, और कुछ लोगों के हेर-फेर के बीच सम्बन्ध हो ही नहीं सकता।

रसूल ﷺ की प्यारी बातें

१. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«اتَّقِ اللهَ حَيْثُمَا كُنْتَ، وَأَتْبِعِ السَّيِّئَةَ الْحَسَنَةَ تَمْحُهَا، وَخَالِقِ النَّاسَ بِخُلُقٍ حَسَنٍ»

"जहाँ कहीं रहो अल्लाह से डरते रहो, और बुराई के बाद अच्छाई कर लो जो (अच्छाई) कि उस (बुराई) को मिटा देगी और लोगों से अच्छे व्यवहार से पेश आओ।"

२. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ»

"नि:संदेह कर्मों का आधार दिल के इरादे पर है।"

३. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«الْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ»

"मुसलमान वह है जिसकी जुबान और हाथ से दूसरे मुसलमान सुरक्षित रहें।"

४. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«مَنْ غَشَّنَا فَلَيْسَ مِنَّا»

"जो धोका दे वह हम में से नहीं है।"

५. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ، فَلَا يُؤْذِ جَارَهُ»

"जो अल्लाह और अंतिम दिन पर विश्वास (ईमान) रखता है तो वह अपने पड़ोसी को कष्ट न दे।"

६. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ، فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ»

"जो अल्लाह और अंतिम दिन पर विश्वास (ईमान) रखता है उसे चाहिए कि अपने मेहमान का सम्मान करे।"

७. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ، فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ»

"जो अल्लाह और अंतिम दिन (आख़िरत के दिन) पर ईमान (विश्वास) रखता है उसे चाहिए कि जब बोले तो अच्छी बात बोले अन्यथा चुप रहे।"

८. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«مِنْ حُسْنِ إِسْلامِ الْمَرْءِ تَرْكُهُ مَا لَا يَعْنِيهِ»

"मुनष्य के इस्लाम के गुणों में से (एक) यह है कि वह ऐसी बातों को छोड़ दे जिस से कोई लाभ न हो।"

९. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ لا يَظْلِمُهُ وَلا يُسْلِمُهُ، مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَخِيهِ كَانَ اللهُ فِي حَاجَتِهِ»

"मुसलमान (दूसरे) मुसलमान का भाई है, वह उस पर अत्याचार नहीं करता और न उसे शत्रु के हवाले करता है, जो अपने भाई की आवश्यकता (की पूर्ति) में लगा रहेगा अल्लाह उस की (आवश्यकता की) पूर्ति में लगा रहेगा।"

१०. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«عَلَيْكُمْ بِالصِّدْقِ، فَإِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِي إِلَىٰ الْبِرِّ، وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِي إِلَىٰ الْجَنَّةِ، وَإِيَّاكُمْ وَالْكَذِبَ، فَإِنَّ الْكَذِبَ يَهْدِي إِلَىٰ الْفُجُورِ، وَإِنَّ الْفُجُورَ يَهْدِي إِلَىٰ النَّارِ»

"सच्चाई को अनिवार्य रूप से पकड़ो कि सच्चाई भलाई की ओर मार्गदर्शन कराती है और भलाई स्वर्ग की ओर ले जाती है, और झूठ से बचो कि झूठ बुराईयों की ओर ले जाती है और बुराईयाँ नरक को ले जाती हैं।"

११. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«إِنَّ الدَّالَّ عَلَى الْخَيرِ كَفَاعِلِهِ»

"भलाई (अच्छाई) की रहनुमाई करने वाला उसके कर्ता के समान है।"

१२. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«اتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ فَإِنَّهُ لَيْسَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ اللهِ حِجَابٌ»

"मज़लूम (जिस पर अत्याचार हो) उसके श्राप (बद्दुआ) से बचो कि उसके और अल्लाह के बीच कोई रुकावट नहीं है।"

१३. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«لَيْسَ الشَّدِيدُ بِالصُّرَعَةِ، إِنَّمَا الشَّدِيدُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ»

"पछाड़ देने वाला बहादुर नहीं है, बहादुर वह है जो गुस्सा के समय अपने ऊपर क़ाबू रख सके।"

१४. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ»

"किसी मुसलमान के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह अपने भाई को तीन रात से अधिक छोड़े।"

१५. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِنْ مَالٍ»

''दान करने से धन में कमी नहीं होती है।''

१६. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«مَا تَوَاضَعَ أَحَدٌ لِلّٰهِ إِلَّا رَفَعَهُ اللهُ عَزَّ وجلَّ»

''अल्लाह के लिए जो झुकता है अल्लाह उसे बुलन्द ही करता है।''

१७. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«اتَّقُوا الظُّلْمَ، فَإِنَّ الظُّلْمَ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ»

''अत्याचार से बचो कि यह क़यामत के दिन अंधकार बन जाएगा।''

१८. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيرَنَا ولَمْ يُوَقِّرْ كَبِيرَنَا»

''जो हमारे छोटों पर दया एवं बड़ो का सम्मान न करे वह हम में से नहीं है।''

१९. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«الغِنَى غِنَى النَّفسِ»

''(असल) मालदारी दिल की मालदारी है।''

२०. अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«أَيُّهَا النَّاسُ! أَفْشُو السَّلَامَ، وَأَطْعِمُوا الطَّعَامَ، وَصَلُّوا وَالنَّاسُ نِيَامٌ، تَدْخُلُوا الجَنَّةَ بِسَلَامٍ»

''ऐ लोगो सलाम फैलाओ, खाना खिलाओ और रात को तब नमाज़ पढ़ो जब लोग सोए हुए हों, तुम जन्नत में शान्ति के साथ प्रवेश करोगे।''

२१. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«لَا تَأْكُلُوا بِالشِّمَالِ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَأْكُلُ بِشِمَالِهِ»

''बायें हाथ से मत खाओ क्योंकि शैतान बायें हाथ से खाता और पीता है।''

२२. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«لَا تَسُبُّوا الأَمْوَاتَ»

''मुर्दों को बुरा भला मत कहो।''

२३. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يُحِبَّ لِأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ»

"तुम में से कोई (पूर्ण) मोमिन तभी हो सकता है जब वह अपने भाई के लिए भी वही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है।"

२४. अबू अम्र और कहा जाता है कि अबू अमरह सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह रज़ि अल्लाहु अन्हु का बयान है, वह बताते हैं कि मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे इस्लाम के बारे में ऐसी कोई बात बताईए कि जिस के संबन्ध में मैं फिर किसी से प्रश्न न कर सकूँ। आप ने फ़रमाया:

«قُلْ : آمَنْتُ بِاللهِ ثُمَّ اسْتَقِمْ»

"कहो मैं अल्लाह पर ईमान लाया और फिर उस पर दृढ़ता से जम जाओ।"

२५. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«الْبِرُّ حُسْنُ الْخُلُقِ، وَالْإِثْمُ مَا حَاكَ فِي صَدْرِكَ، وَكَرِهْتَ أَنْ يَطَّلِعَ عَلَيْهِ النَّاسُ»

"पुण्य अच्छे व्यवहार का नाम है। और पाप वह है जो तुम्हारे दिल में खटके और ये कि तुम को यह नापसन्द हो कि लोग उसके संबन्ध में जान जायें।"

२६. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«مَنْ رَأَى مِنْكُمْ مُنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهِ، فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهِ، فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهِ وَذٰلِكَ أَضْعَفُ الإِيمَانِ»

"तुम में से जो कोई किसी बुराई को देखे तो उसे हाथ से अवश्य रोके यदि उसकी शक्ति नहीं है तो ज़ुबान से रोके और यदि इसकी भी शक्ति न हो तो दिल से (बुरा माने) और यह सब से कमज़ोर ईमान है।"

२७. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«إِنَّ مِنْ خِيَارِكُمْ أَحَاسِنَكُمْ أَخْلَاقًا»

"नि:संदेह तुम में सब से अच्छा वही है जो सब से अच्छा व्यवहार वाला है।"

२८. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

«خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ»

"तुम में सब से अच्छा वह है जो क़ुरआन सीखे और सिखाये।"

◆ ◆ ◆